हिन्दी पुष्पमाला
VI
(छठी कक्षा के लिए पाठ्य पुस्तक)

लेखक :
इबोहल सिंह काङ्जम
देवराज
बी रघुमणि शर्मा
एस. लनचेनबा मीतै

बोर्ड ऑफ सेकेण्डरी एड्रकेशन
मणिपुर

Published By :
The Secretary ,
Board of Secondary Education,
Manipur

© Board of Secondary Education, Manipur

First Edition	**:**	March, 2011
Second Edition	**:**	January, 2012
Reprint	**:**	October, 2014
Reprint	**:**	December, 2015
Reprint	**:**	January, 2018
Reprint	:	January, 2019
Revised Print	**:**	September, 2019
Revised Print	**:**	August , 2020

No. of Copies : 15,000

Rs. 65/-

Printed at : DBROS OFFSET PRINTER AND PERIPHERIAL SYSTEM
SINGJAMEI SOUGRAKPAM LEIKAI

सचिव का निवेदन

विश्व की बदलती परिस्थितियों, वातावरण और परिवेश के साथ कदम मिलाकर चलने के लिए यह राष्ट्रीय पाठ्यर्चा की रुपरेखा २००५ (एन. सी एफ. -२००५) के अनुसार पाठ्य पुस्तकों का निर्माण कराकर प्रकाशित करता आ रहा है। शिक्षा को उच्च स्तर तक उठाना इस बोर्ड की कोशिश रही है।

जो पुस्तकें राष्ट्रीय पाठ्यर्चा की रुपरेखा २००० के अन्तर्गत लिखकर प्रकाशित की गईं, उनको नये राष्ट्रीय पाठ्यर्चा की रुपरेखा २००५ के अनुसार संशोधित तथा परिवर्धित कर समयानुकूल बनवाकर प्रकाशित किया जा रहा है। यह भी लक्ष्य रखा गया है कि मणिपुरी वातावरण के साथ उनका संगत हो। इसलिए पूरी सावधानी रखवाकर पुस्तकों को फिर से तैयार करवाकर प्रकाशित किया जा रहा है। लेखकों और परीक्षण-परिमापन करने वालों के साथ बैठकर काफी गहराई तथा विस्तत रूप से विचार-विमर्श कर पुस्तकों की कमियों और त्रुटियों का परिमार्जन कराकर पुस्तक प्रकाशित की जा रही है।

इस पुस्तक के निर्माण में और छात्रों के द्वारा व्यवहार करवाने में जो समस्याएँ आईं उसका समाधान किया गया है । उसके बाद जो परिणाम सामने आए उन कसौटियों पर मैंने लेखकों और सम्बन्धित व्यक्तियों से परामर्श किया है। इस कार्य में लेखकों तथा सम्बन्धित सज्जनों ने जो सहयोग दिया है उसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ ।

इस पुस्तक को और भी उत्कृष्ट बनाने के लिए जो भी सुझाव सुधीजनों की तरफ से आएंगे उनका सादर स्वागत किया जाएगा। अत: रचनात्मक सुझाव और परिमार्जन के लिए विद्वज्जन अपना सहयोग प्रदान करें ।

— डा. चिथुङ मेरी थोमास
सचिव

गांधीजी का जंतर

तुम्हें एक जंतर देता हूँ। जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ:

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगा होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुँचेगा ? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा ? यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है ?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

प्रस्तावना

हिन्दीतर भाषी क्षेत्रों के विद्‌यार्थियों के लिए हिन्दी शिक्षण धीरे-धीरे विकसित होने वाली अभ्यासाधारित प्रक्रिया है। पाँचवीं कक्षा उत्तीर्ण करने तक उसे जिस भाषिक संरचना और विषय-सामग्री से परिचित कराया जाता है, वह हिन्दी के माध्यम से ज्ञान उपलब्ध करने की पृष्ठभूमि तैयार करने वाली कही जा सकती है। छठी कक्षा में प्रवेश लेने पर एक नवीन बात यह होती है कि छात्र को अध्ययन के लिए प्रदान की जाने वाली सामग्री में भाषा और विषय पर प्रायः बराबर-बराबर ध्यान दिया जाने लगता है। इसके माध्यम से श्रवण, भाषण, लेखन, वाचन और चिन्तन सम्बन्धी जिस न्यूनतम स्तर को उपलब्ध करने की आशा की जाती है, उसके निम्नांकित सम्भव बिन्दु हैं -

- सभाओं और बैठकों की कार्यवाही सुनकर समझना।
- अपरिचित घटनाओं के वर्णन सुनकर समझना।
- गद्‌य एवं पद्‌य की शुद्‌ध उच्चारण एवं सटीक आरोह-अवरोह के साथ आवृत्ति करना।
- कक्षा स्तरीय छात्र-संसद में विचार प्रकट करना।
- घटनाओं का वर्णन करना।
- दूरदर्शन के पर्दे पर आने वाली और सार्वजनिक स्थानों पर लिखी सूचनाओं का वाचन करना
- चार्ट व नक्शे पढ़ना।
- संयुक्ताक्षर वाले कठिन शब्दों का अनुलेखन और श्रुत-लेखन करना।
- प्रत्यक्ष अनुभव वाली एवं सुनी हुई घटनाओं को लिखना।
- सामान्य विषयों पर लघु-लेख लिखना।
- पाठ्‌य-सामग्री के आधार पर साधारण प्रश्नों का निर्माण करना।

प्रस्तुत पुस्तक की सामग्री का निर्माण करते समय इन सभी बिन्दुओं को ध्यान में रखा गया है। भाषा-संघटन में विकास की पद्‌धति का अनुसरण करने के साथ-साथ मुहावरों, विशिष्ट शब्द प्रयोगों, पिछली कक्षाओं के अतिरिक्त रचना-शैलियों आदि का भरपूर सहयोग लेते हुए इस उद्‌देश्य को भी ध्यान में रखा गया है कि छात्र सामग्री के पूरे ढाँचे से निकटता और निजीपन स्थापित करे।

''राष्ट्रीय शिक्षा-नीति- 1986'' ने शिक्षाविदों और समाज के जागरूक नागरिकों को नए सिरे से शिक्षा के समग्र रूप का मूल्यांकन करने को प्रेरित किया। इससे धीरे-धीरे नई शिक्षा-नीति का स्वरूप स्पष्ट हुआ और सभी राज्य सरकारें नवीन पाठ्य-सामग्री के निर्माण हेतु सक्रिय हुईं। मणिपुर सरकार ने भी राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद तथा बोर्ड ऑफ सेकेण्डरी एडूकेशन के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में आने वाली इस नवीन क्रान्ति का स्वागत किया। राज्य सरकार की इसी सजगता का परिणाम है कि अध्यापक- केन्द्रित के बदले छात्र-केन्द्रित पाठ्य सामग्री प्रकाश में आई।

किन्तु यह क्रान्ति तब तक निष्प्रभावी रहेगी, जब तक कि अध्यापक इसमें सक्रिय भागीदारी न करें। नई शिक्षा का लक्ष्य केवल पाठ्य सामग्री को छात्र-केन्द्रित बनाना नहीं है, बल्कि पूरी शिक्षा पद्धति की छात्र-केन्द्रित बनाना है। इसके लिए पाठ्य सामग्री की अध्यापन-शैली को ''छात्र-केन्द्रित'' बनाना अनिवार्य है। यह कार्य केवल अध्यापकों द्वारा ही सम्भव है; अतः उन्हें अपने शैक्षिक, सामाजिक और राष्ट्रीय दायित्व का निर्वाह करने के लिए अपनी अध्यापन-शैली में आवश्यक परिवर्तन लाना चाहिए। उन्हें इस तथ्य का ध्यान रखना चाहिए कि भाषा और साहित्य का अध्यापन करते समय खड़िया-श्यामपट का उपयोग जितना आवश्यक है, उतना ही छात्रों से प्रश्नोत्तर करना भी। मूल पाठ्य सामग्री की व्याख्या के क्रम में आनुषंगिक जानकारियाँ देना, छात्रों को तत्सम्बन्धी अन्य जानकारियाँ एकत्रित करके कक्षा में प्रस्तुत करने की प्रेरणा देना तथा इस क्रम में निरन्तरता बनाए रखना अध्यापन-कार्य को नया अर्थ प्रदान कर सकता है।

शिक्षा का व्यक्तित्व के विकास का मूलाधार मानते हुए प्रस्तुत पाठ्य पुस्तक में विविध विषयक सामग्री संजोई गई है। इतिहास, संस्कृति, खेल, पर्यावरण, प्रकृति, स्वास्थ्य, विज्ञान, सामाजिक व वैयक्तिक आचार-व्यवहार, पशु-पक्षी आदि की जानकारी से भरपूर यह सामग्री यथासम्भव रुचिकर ढंग से निर्मित है। कविताएँ भी लयबद्ध और विविध विषयक हैं।

आशा है, यह पुस्तक छात्रों की आवश्यकता की पूर्ति करेगी। यदि अध्यापक-बंधु अगले संस्करण हेतु रचनात्मक सुझाव देंगे तो लेखक-मण्डल को प्रसन्नता होगी।

- लेखक-मण्डल

सीखने के प्रतिफल

कक्षा छह **हिंदी**

बच्चे –

- विभिन्न प्रकार की ध्वनियों जैसे - बारिश, हवा, रेल, बस आदि को सुनने और किसी वस्तु के स्वाद आदि के अनुभव को अपने ढंग से मौखिक/सांकेतिक भाषा में प्रस्तुत करते हैं।
- देखी, सुनी (अनुभव की) गई बातों; जैसे- स्थानीय सामाजिक घटनाओं, कार्यक्रमों और गतिविधियों पर बेझिझक बात करते हैं, प्रश्न करते हैं और बातचीत को अपने ढंग से आगे बढ़ाते हैं।
- रेडियो, टी.वी., अखबार, इंटरनेट में देखी/सुनी गई खबरों को अपने शब्दों में कहते हैं।
- विभिन्न अवसरों/संदर्भों में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से बताते हैं/लिखते हैं।
- अपने परिवेश में मौजूद लोककथाओं और लोकगीतों के बारे में चर्चा करते हैं।
- अपने से भिन्न भाषा, खान-पान, रहन-सहन संबंधी विविधताओं पर बातचीत करते हैं।
- किसी पाठ्यवस्तु की बारीकी से जाँच करते हुए उसमें किसी विशेष बिंदु को खोजते हैं, निष्कर्ष निकालते हैं।
- हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री (पत्र-पत्रिका, इंटरनेट पर प्रकाशित होने वाली सामग्री आदि) को समझकर पढ़ते हैं और उस पर मौखिक/लिखित/ब्रेल/सांकेतिक भाषा में अपनी पसंद-नापसंद, राय, टिप्पणी देते हैं।
- भाषा की बारीकियों/व्यवस्था/ढंग पर ध्यान देते हुए उसकी सराहना करते हैं, जैसे- कविता में लय-तुक, वर्ण-आवृत्ति (छंद) तथा कहानी, निबंध में मुहावरे, लोकोक्ति आदि।
- विभिन्न विधाओं में लिखी गई साहित्यिक सामग्री को उपयुक्त उतार-चढ़ाव और सही गति के साथ पढ़ते हैं।
- हिंदी भाषा में विविध प्रकार की रचनाओं को पढ़ते हैं।
- नए शब्दों के प्रति जिज्ञासा व्यक्त करते हैं और उनके अर्थ समझने के लिए शब्दकोश का प्रयोग करते हैं।
- विविध कलाओं से जुड़ी सामग्री में प्रयुक्त भाषा के प्रति जिज्ञासा व्यक्त करते हुए उसकी सराहना करते हैं।
- दूसरों के द्वारा अभिव्यक्त अनुभवों को ज़रूरत के अनुसार जैसे सार्वजनिक स्थानों (चैपाल, चैराहों, नलों, बस अड्डे आदि) पर सुनी गई बातों को लिखते हैं।
- विभिन्न संदर्भों में विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते समय उपयुक्त विराम चिह्नों, शब्दों, वाक्य संरचनाओं, मुहावरे आदि का उचित प्रयोग करते हैं।

NCERT
Ministry of Human Resource Development
Government of India

पुनर्विलोकन व परिशोधन-कर्ता

बी. लालजी शर्मा

एस. लनचेनबा मीतै

अन्तिम निर्णायक

इबोहल सिंह काङ्जम

S9W7K8

पाठ - सूची

1.	मीठे सपने	1
2.	मुक्ना	5
3.	गानङ्गइ	10
4.	घरेलू पशु	16
5.	पंचायती राज	22
6.	निङोन चाक्कौबा	28
7.	मणिपुर की धरती	33
8.	सिरोइ लिली	37
9.	हॉकी	43
10.	उत्तराधिकारी का चुनाव	48
11.	खेल-कूद और स्वास्थ्य	55
12.	सफलता की कुंजी	61
13.	प्यारा देश	66
14.	थाङ्गाल जनरल	70
15.	मिजोरम के लोक-नृत्य	77
16.	हमारी विधान-सभा	82
17.	मणिपुर के निवासी	87
18.	टेलीविजन की कहानी	92
19.	मधुमक्खी	99
20.	कुपोषण	104
21.	शुमाङ्-लीला	111
	नागरिकों के मूल कर्तव्य	117
	राष्ट्रगान	119

पाठ - एक

मीठे सपने

विहग, उषा-काल, छवि, न्यारी, मंद, झोंका, हलचल, आभा, अनुशासन, विद्‌या, चहकना, बुनना ।

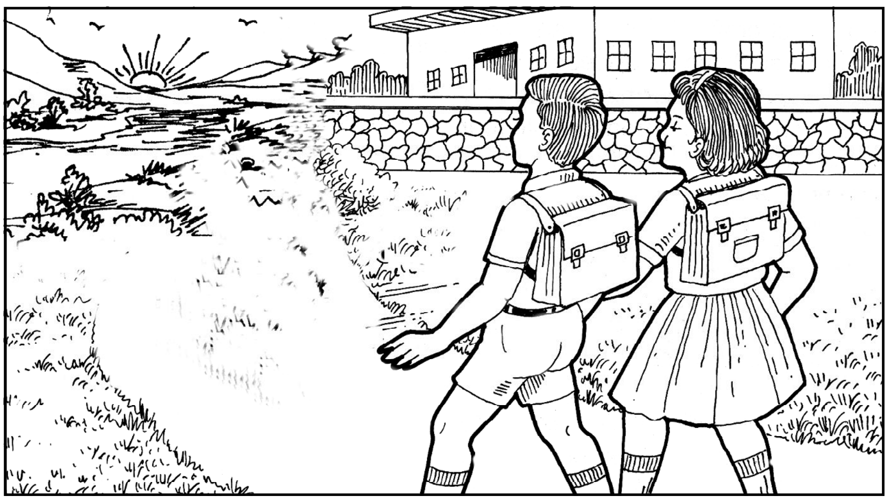

विहग सुनाते उषा-काल में ।
चहक-चहक कर बोली प्यारी ।
रंग-बिरंगे फूल बनाते ।
छवियाँ कुछ न्यारी-न्यारी ।।

मंद हवा के झोंके आते ।
पत्तों में हलचल आ जाती ।
बाल-सूर्य की आभा आती ।
सब को मीठे गीत सुनाती ।।

हम भी उठते उषा-काल में ।
अपने कामों में लग जाते ।
जल्दी से तैयारी करके ।
सही समय विद्यालय आते ।।

अनुशासन का पालन करते ।
अध्यापक की बातें सुनते ।
विद्या पाकर बड़े बनेंगे ।
ऐसे मीठे सपने बुनते ।।

प्रश्न - अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

विहग = पक्षी, चिड़िया।
उषा-काल = सुबह का समय।
छवि = शोभा, सुन्दरता।
न्यारा = विचित्र, अपूर्व, अद्भुत ।
मंद = धीमा ।
हवा = पवन, वायु ।
झोंका = झटका, तेज हवा का धक्का ।
हलचल = शोरगुल, उपद्रव, लड़ाई-झगड़ा ।
आभा = चमक, झलक ।
अनुशासन = नियम-पालन ।
चहकना = चिड़ियों का चहचहाना ।
बुनना = धागे से कपड़ा बनाना।

2. उत्तर दीजिए :

(क) कब विहग प्यारी बोली सुनाते हैं ?
(ख) रंग-बिरंगे फूल क्या बनाते हैं ?
(ग) कब पत्तों में हलचल आ जाती है ?

(घ) कौन सब को मीठे गीत सुनाता है ?

(ङ) बच्चे सुबह उठकर क्या करते हैं ?

(च) बच्चे कौन-से मीठे सपने बुनते हैं ?

(छ) सुबह में मुर्गा हमें क्या संदेश देता है ।

3. ***वाक्यों में प्रयोग कीजिए :***

विहग --

न्यारी --

मंद --

झोंका --

हलचल --

आभा --

छवि --

अनुशासन --

जल्दी --

सपना --

4. ***पूरा कीजिए***

मंद हवा .... ।

.... *आ जाती।*

बाल-सूर्य की .... *सुनाती।*

5. निम्नलिखित समान अर्थ वाले शब्दों को समझिए और याद रखिए :
विहग ----- पक्षी, चिड़िया, खग, पखेरू, नभचर ।
फूल ----- सुमन, पुष्प, प्रसून, पुहुप ।
हवा -----पवन, वायु, समीर, अनिल, मारुत ।
सूर्य ----- रवि, भानु, भास्कर, दिनकर, दिनमणि, दिनेश, प्रभाकर ।
उषा ----- भोर, सुबह, सबेरा, प्रभात, तड़का ।

M2Q8K8

पाठ - दो

मुक्ना

प्राचीन, कुश्ती, शक्ति, कौशल, परख, परम्परा, लड़ी, रेफरी, उपस्थिति, मुकाबला, खिलाड़ी, इशारा, कोशिश, उठा-पटक, पीठ, प्रतिद्वन्द्वी, हासिल, चुनौती, घोषित, कसना, अटकाना ।

मुक्ना मणिपुर के प्राचीन खेलों में से एक है। इसे मणिपुरी कुश्ती कहा जा सकता है। इसमें कुश्ती की तरह शक्ति और कौशल की परख होती है। परम्परा से यह पुरुषों का खेल है ।

मुक्ना में भाग लेने के लिए प्रत्येक खिलाड़ी घुटने के ऊपर तक धोती पहनता है और चादर की लड़ी बना कर कमर पर कस कर बाँधता है। इस खेल के लिए एक रैफरी रहता है। रैफरी की उपस्थिति में दोनों खिलाड़ी आमने-सामने खड़े होते हैं । रैफरी के इशारा करते ही दोनों का मुकाबला शुरू हो जाता है ।

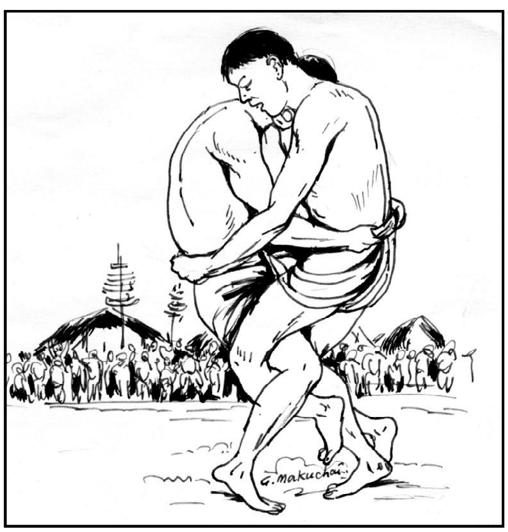

मुक्ना के मुकाबले में दोनों खिलाड़ी एक दूसरे के पैर में पैर अटका कर गिराने की कोशिश करते हैं। पैर अटकाने की इस क्रिया को ''लौ'' कहा जाता है। इस खेल में उठा-पटक भी होता है। एक खिलाड़ी दूसरे खिलाड़ी को ऊपर उठाता है और नीचे गिराता है। गिरते या पटकते समय नीचे वाला खिलाड़ी कोशिश करता है कि अपनी पीठ जमीन को छू न जाए। क्योंकि इस खेल में जिसकी पीठ पहले जमीन को छू जाती है, उसे हार माननी पड़ती है। इसलिए कुशल खिलाड़ी सदा यही कोशिश करता है कि यदि वह गिर भी जाए तो अपनी पीठ जमीन को न छुए और बदले में गिराने वाले की पीठ ही पहले जमीन को छू ले ।

यदि कोई खिलाड़ी अपने सब प्रतिद्वन्द्वियों को हरा कर जीत हासिल कर लेता है और उसकी चुनौती देने वाला कोई भी नहीं बचता तो उसे उस वर्ष विशेष का ''मुक्ना-जात्रा'' घोषित किया जाता है। इस सन्दर्भ में ''जात्रा'' का अर्थ होता है - चैम्पियन/यानी विजेता।

प्रश्न - अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

कुश्ती = दो आदमियों का एक दूसरे को पछाड़ने के लिए गुथकर लड़ना, मल्लयुद्ध ।

कौशल = चतुरता, दक्षता ।

परख = दोष-गुण का निर्णय करना, परीक्षा ।

परम्परा = चला आता हुआ अटूट सिलसिला, अनुक्रम ।

लड़ी = एक साथ मिलाकर बटी हुई रस्सी, पंक्ति ।

इशारा = संकेत ।

कोशिश = प्रयास, यत्न ।

मुकाबला = आमना-सामना, लड़ाई, बराबरी ।

प्रतिद्वन्द्वी = विपक्षी, विरोधी, शत्रु।

चुनौती = ललकार, युद्ध ।

हासिल = जो कुछ हाथ लगा हो, लब्ध ।

विग्रह = शरीर, रूप, मूर्ति ।

2. उत्तर दीजिए :

(क) किसे मणिपुरी कुश्ती कहा जा सकता है ?

(ख) मुक्ना में किसकी परख होती है ?

(ग) मुक्ना के खिलाड़ी की पोशाक कैसी होती है ?

(घ) कब दोनों खिलाड़ियों का मुकाबला शुरू होता है ?

(ङ) ''लौ'' किसे कहते हैं ?

(च) मुक्ना का खेल कैसा होता है ?

(छ) ''मुक्ना-जात्रा'' की घोषणा किस आधार पर होती है ?

(ज) मणिपुरी भाषा में 'जात्रा' 'शब्द का दूसरा अर्थ बताइए ।

(झ) मणिपुर में 'जात्रावाली' शब्द किसके लिए जाना जाता है ?

3. *वाक्यों में प्रयोग कीजिए :*

कौशल --

परख --

परम्परा --

उपस्थिति --

इशारा --

मुकाबला --

जमीन --

विग्रह --

अवश्य --

कार्यक्रम --

4. ***खाली जगह भरिए :***

(क) मुक्ना .... खेलों में से है।

(ख) प्रत्येक खिलाड़ी घुटने के ऊपर तक .... है।

(ग) पैर अटकाने की .... कहा जाता है।

(घ) एक खिलाड़ी .... उठाता है।

(ङ) यह खेल देवी-देवता के .... अवश्य होता है।

5. ***सही कथन चुनिए और लिखिए :***

(क) मुक्ना में शक्ति और कौशल की परख होती है।

(ख) मुक्ना परम्परा से स्त्रियों का खेल है।

(ग) मुक्ना खेल में उठा-पटक भी होता है।

(घ) जिसकी पीठ पहले जमीन को छू जाती है, उसे जीत माननी पड़ती है।

....

....

....

....

6. **पढ़ो और समझो :**

मुक्ना मणिपुर के प्राचीन खेलों में से एक है ।

इस वाक्य में

'मुक्ना' एक खेल का नाम है और मणिपुर एक प्रदेश का नाम है ।

ऐसे नामबोधक शब्दों को संज्ञा कहते हैं ।

....

पाठ - तीन

गान्ङाइ

जनजाति, प्रमुख, प्रसिद्ध, फसल, नृत्य-प्रधान, रक्षक, भाला, हृष्ट-पुष्ट, परम्परागत, वेश-भूषा, कोलाहल, सम्पन्न, उत्पादन, वृद्धि, उपहार, शुभकामना ।

उरिपोक, इम्फाल
२० अगस्त, २००४

प्रिय मित्र रमेश,

तुम्हारा पत्र मिला। पत्र में तुमने लिखा है कि तुम मणिपुर की किसी जनजाति के किसी एक त्योहार के बारे में जानना चाहते हो । तो लो, एक प्रमुख त्योहार के बारे में लिखता हूँ ।

रमेश, तुम जानते हो, मणिपुर में अनेक जातियाँ हैं। उनमें से एक है, कबुइ। यह जाति साल में कई त्योहार मनाती है। उनमें सब से अधिक प्रसिद्ध है – ''गान्ङाइ''। यह त्योहार धान की फसल कटने के बाद मनाया जाता है। यह नृत्य-प्रधान त्योहार है। इसमें युवक-युवतियाँ, बच्चे-बूढ़े – सभी भाग लेते हैं।

''गान्ङाइ'' जनवरी के महीने में मनाया जाता है। यह पाँच से सात दिन तक मनाया जाता है। इस त्योहार के पहले ही दिन सुबह गाँव के बूढ़े लोग गाँव के रक्षक ''रागोर'' नामक देवता को सूअर या मिथुन की बलि चढ़ा कर पूजा करते हैं और उस देवता से वर माँगते हैं। उसी दिन शाम को गाँव के हृष्ट-पुष्ट युवक अपनी परम्परागत वेश-भूषा में भाला लेकर, ढोलक बजा कर कोलाहल करते हुए गाँव भर में घूमते हैं। उसके बाद उन युवकों द्वारा देवता के सामने खुले मैदान में पत्थर फेंकना, भाला फेंकना, उछल-कूद, कुश्ती आदि कार्यक्रम सम्पन्न किए जाते हैं। रात को युवक घर वापस जा कर खाना पकाते हैं और धान की देवी को मुर्गा-मुर्गी चढ़ाते हैं । अगले दिनों में युवक-युवतियाँ और बूढ़े-बुढ़ियाँ अपनी

परम्परागत रंग-बिरंगी वेश-भूषा में एक साथ नाचते और गाते हैं। इन दिनों रात को गाँव के सभी युवक ''पाखङ्फान'' अर्थात् युवक-मंच में रहते हैं और सभी युवतियाँ ''लैशाफान'' अर्थात् युवती-मंच में रहती हैं। अन्तिम दिन बहुत महत्वपूर्ण पूजा का होता है। सभी लोग अपने-अपने काम छोड़ कर पूजा में लगे रहते हैं। गाँव के बूढ़े लोग एक विशेष स्थान पर

जाकर पूजा करते हैं और अगले वर्ष की फसल के उत्पादन में वृद्धि के लिए प्रार्थना करते हैं। इस पूजा को ''लाङ्पत्नै''कहते हैं । अगले दिन सुबह युवक-मंच और युवती-मंच के सभी सदस्य एक दूसरे को उपहार देने का कार्यक्रम सम्पन्न करते हैं और उसके बाद एक-दूसरे को विदा करते हैं। इस प्रकार कबुइ जनजाति के लोग ''गान्ङाइ'' त्योहार मनाते हैं।

रमेश, ''गान्ङाइ'' के बारे में संक्षेप में इतना ही हैं। अन्य त्योहारों के बारे में भी जानना चाहो तो कहना, मैं फिर लिखूँगा ।

शुभकामनाओं सहित ।

तुम्हारा मित्र,

कैसाम चाओबा सिंह

प्रश्न - अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

प्रसिद्ध = मशहूर, ख्यात।
फसल = खेती की पैदावार, उपज ।
रक्षक = रक्षा करने वाला ।
हृष्ट-पुष्ट = तगड़ा, हट्टा-कट्टा ।
कोलाहल = हल्ला, हंगामा, एक साथ बोलने से होने वाला शोर ।
उत्पादन = पैदावार, पैदा होना ।
वृद्धि = बढ़ना ।
उपहार = भेंट, सौगात ।
शुभकामना = मंगलमय इच्छा ।

2. उत्तर दीजिए :

(क) रमेश क्या जानना चाहता है ?
(ख) कबुइ जनजाति का सब से अधिक प्रसिद्ध त्योहार कौन-सा है ?
(ग) गान्ङाइ कब मनाया जाता है ?
(घ) गान्ङाइ कैसा त्योहार है ?
(ङ) गान्ङाइ में कौन-कौन भाग लेते हैं ?
(च) गान्ङाइ कितने दिन तक मनाया जाता है ?
(छ) गान्ङाइ के पहले दिन बूढ़े लोग क्या करते हैं ?
(ज) युवकों के कौन-कौन से कार्यक्रम सम्पन्न किए जाते हैं ?
(झ) अगले दिनों में क्या-क्या होता है ?
(ञ) त्योहार के दिनों में रात को युवक और युवतियाँ कहाँ रहते हैं ?
(ट) अन्तिम दिन क्या-क्या होता है ?
(ठ) युवक-मंच और युवती-मंच के सभी सदस्य एक दूसरे को विदा करने से पहले क्या करते हैं ?
(ड) कौन रमेश के नाम पत्र लिखता है ?
(ढ) मणिपुर के मैतै जाति का सब से अधिक प्रसिद्ध त्योहार कौन-सा है ?

3. ***वाक्यों में प्रयोग कीजिए :***

त्योहार --

प्रसिद्ध --

रक्षक --

कोलाहल --

वेश-भूषा --

फसल --

उत्पादन --

वृद्धि --

प्रार्थना --

उपहार --

4. ***उचित शब्द चुनकर खाली जगह भरिए :***

(क) गानङाइ .... दिन तक मनाया जाता है।
(पाँच/सात)

(ख) धान की .... को मुर्गा-मुर्गी चढ़ाते हैं।
(देवी/देवता)

(ग) गानङाइ .... त्योहार है।
(नृत्य-प्रधान/गीत-प्रधान)

5. ***सही कथन के आगे (√) का निशान और गलत कथन के आगे (×) का निशान लगाइए :***

(क) गानङाइ धान की फसल कटने के बाद मनाया जाता है। ☐

(ख) "रागोर" नामक देवता को मुर्गी की बलि चढ़ा कर पूजा करते हैं। ☐

(ग) गानङाइ में केवल बूढ़े और बुढ़ियाँ नाचते हैं। ☐

(घ) रात को सभी युवक पाखङ्फान में रहते हैं। ☐

(ङ) अन्तिम दिन बहुत महत्वपूर्ण पूजा का होता है। ☐

6. ***निम्नांकित शब्दों के लिंग लिखिए :***

युवक ....

फसल ....

रात ....

मैदान ....

युवती ....

उपहार ....

धान ....

7. **पढ़िये और समझिये :**

गानङाइ कबुइ जाति का सबसे अधिक प्रसिद्ध त्योहार है । यह त्योहार धान की फसल कटने के बाद मनाया जाता है । यह नृत्य-प्रधान त्योहार है ।

उपर्युक्त गद्यांश में गानङाइ संज्ञा के बदले दूसरे और तीसरे वाक्य में 'यह' शब्द का प्रयोग किया जाता है । इसलिए यह सर्वनाम शब्द है । इस तरह तुम , हम, वह, वे, तू आदि सर्वनाम शब्द हैं ।

....

P7V9V5

पाठ - चार

घरेलू पशु

पालतू, दर्जा, पवित्र, सौम्य, बछड़ा, जुगाली, गोबर, सम्पूर्ण, सहृदयतापूर्वक, बरताव, उपयोगी, नुकसान, कीचड़, नाखून, निष्ठावान, प्रशिक्षण, अलावा, प्रदर्शन, पिल्ला, उपयुक्त, विचरना, ढकना, सूँघना ।

सर्वप्रथम पशु तथा अन्य जीव जंगलों में विचरते थे । बाद में मनुष्यों ने इन्हें पकड़ कर पालतू बनाया और अनेक कार्यों में इनका प्रयोग किया । जो पशु घरों में पाल कर रखे गए, उन्हें घरेलू पशु का दर्जा दिया गया ।

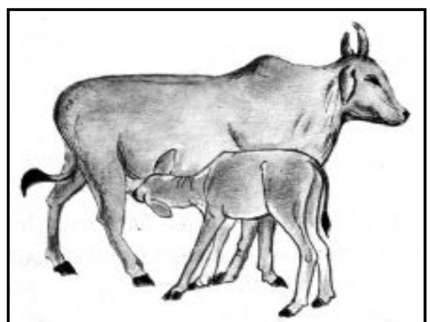

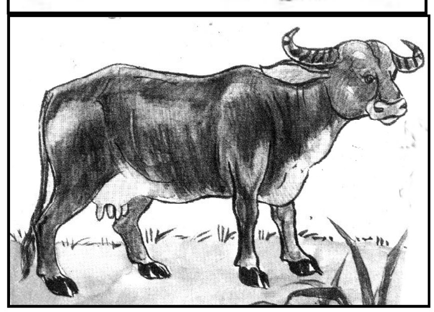

कुछ घरेलू पशुओं के नाम इस प्रकार हैं -गाय, भैंस, बिल्ली, कुत्ता, घोड़ा आदि।

गाय संसार में सब जगह पाई जाती है। यह हिन्दुओं का एक पवित्र पशु है। गाय बहुत ही कोमल तथा सौम्य होती है। लेकिन जब कोई इसके बछेड़ा /बछड़ा या बछेड़ी को परेशान करता है, तो यह उसे सींगों से वार/प्रहार करती है। गाय एक ही बच्चे को जन्म देती है। यह घास खाती है और जुगाली करते हुए आराम करती है। गाय का सम्पूर्ण शरीर उपयोगी होता है। उसका गोबर अपवित्र को पवित्र बनाता है। हमें गाय के साथ सहृदयतापूर्वक बरताव करना चाहिए।

भैंस को गाय ही की तरह घरों में पाल सकते हैं। अधिकतर भैंस का रंग काला होता है। कभी-कभी सफेद भैंस भी मिलती है। इसका शरीर बड़ा और सींग लम्बे और चौड़े होते हैं। भैंस अधिक समय पानी और कीचड़ में रहना पसन्द करती है। वह दूध देने के साथ-साथ खेतों में भी काम करती है ।

कुत्ता बहुत उपयोगी घरेलू पशु है। उसका शरीर मोटे बालों से ढका रहता है। उसके दाँत और नाखून तेज होते हैं, जिनकी सहायता से वह अपने शत्रु को नुकसान पहुँचाता है। यह एक निष्ठावान पशु है। उसकी सूँघने की इन्द्रियाँ बहुत तेज होती हैं। वह अपने मालिक के घर की दिन-रात रक्षा करता है। कुत्ते को प्रशिक्षण देकर पुलिस वाले चोर, डाकू आदि पकड़ने में उसका प्रयोग करते हैं। इसके अलावा कुत्ता खेलों में भी अच्छा प्रदर्शन कर सकता है। कुतिया एक ही समय में चार से पाँच पिल्लों को जन्म देती है।

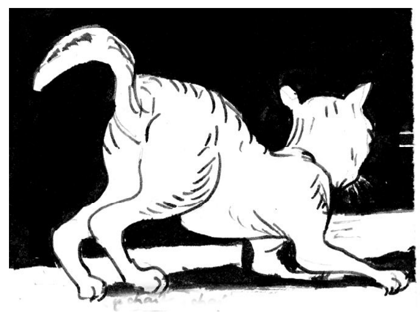

तुम लोगों ने बिल्ली देखी होगी। वह एक साधारण घरेलू पशु है। लोग इसको बड़े प्यार से पालते हैं। बिल्ली रात के अन्धेरे में भी देख सकती है। कुत्ते की तरह बिल्ली प्रशिक्षण नहीं ले सकती।

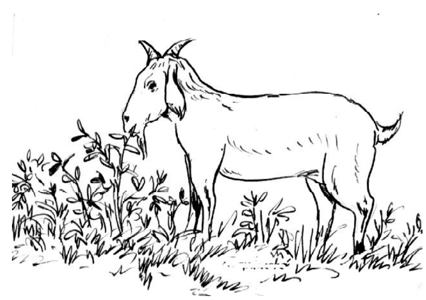

बकरी एक विशेष घरेलू पशु है। उसमें खाने लायक चीजें चुनने की विशेष बुद्धि होती है। इसलिए जो चीजें अन्य पशु छोड़ देते हैं, वह उनमें से भी खाने लायक वस्तुएँ खोज लेती है। उसका दूध सब से उपयुक्त और लाभदायक होता है। गाय की तरह बकरी का भी सारा शरीर उपयोगी होता है।

प्रश्न - अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

विचरना	=	इधर-उधर घूमना ।
पालतू	=	जो पाला जा सके, पाला हुआ। ।
दर्जा	=	श्रेणी, कोटि, कक्षा ।
पवित्र	=	शुद्ध, निर्मल ।

सौम्य	=	सुन्दर, रमणीक ।
परेशान	=	व्याकुल, हैरान ।
जुगाली	=	गाय-बैल आदि का निगले हुए चारे को थोड़ा-थोड़ा पेट से मुँह में लाकर चबाना ।
गोबर	=	गाय का मल ।
सहृदयतापूर्वक	=	दयालुता के साथ ।
बरताव	=	व्यवहार ।
कीचड़	=	पैरों में चिपकने वाली गीली मिट्टी, पंक ।
निष्ठावान	=	विश्वास करने योग्य वाला ।
प्रशिक्षण	=	ट्रेनिंग ।
पिल्ला	=	कुत्ते का नर-बच्चा ।
उपयुक्त	=	उपयोग में लाया हुआ, उचित, योग्य ।

2. उत्तर दीजिए :

(क) घरेलू पशु किसे कहते हैं ?
(ख) कुछ घरेलू पशुओं के नाम बताइए ।
(ग) हिन्दुओं का पवित्र पशु कौन है ?
(घ) गाय कैसा पशु है ?
(ङ) गाय का रंग कैसा होता है ?
(च) भैंस का आकार कैसा होता है ?
(छ) कुत्ता कैसा पशु है ?
(ज) कुत्ता क्या-क्या कर सकता है ?
(झ) कुतिया एक ही समय में कितने पिल्लों को जन्म देती है ?
(ञ) बिल्ली कैसा पशु है ?
(ट) बकरी में कौन-सी विशेष बुद्धि होती है ?
(ठ) बकरी का दूध कैसा होता है ?
(ड) हिन्दुओं का पवित्र पशु क्या है ?
(ढ) मुसलमानों का अपवित्र पशु क्या है ?
(ण) मणिपुर में अनुपलब्ध दूध देनेवाले एक घरेलू पशु का नाम बताइए ।

3. ***वाक्यों में प्रयोग कीजिए :***

पालतू --

दर्जा --

पवित्र --

जुगाली --

सम्पूर्ण --

उपयोगी --

निष्ठावान --

प्रशिक्षण --

बरताव --

प्रदर्शन --

4. ***खाली जगह भरिए :***

(क) *सर्वप्रथम पशु तथा .... विचरते थे।*

(ख) *गाय हिन्दुओं का .... है।*

(ग) *कभी-कभी सफेद .... मिलती है।*

(घ) *कुत्ता खेलों में भी .... सकता है।*

(ङ) *गाय की तरह बकरी का .... उपयोगी होता है।*

5. *तालिका को देखिए और वाक्य बनाइए :3.तालिका को देखिए और वाक्य*

गाय	*हिन्दुओं का एक पवित्र*	
कुत्ता	*बहुत अपयोगी घरेलू*	
बिल्ली	*एक साधारण घरेलू*	*पशु है।*
बकरी	*एक विशेष घरेलू*	
भैंस	*भी एक घरेलू*	

....

....

....

....

....

6. **ध्यान से पढ़िए और समझिए :**

''में'' का प्रयोग विभिन्न अर्थों में होता है, जैसे –

(क) निश्चित स्थान को सीमा-सहित बताने के लिए –

वह शहर में रहता है ।

कुएँ में पानी है ।

पर्स में पचास रूपए हैं ।

(ख) समय की सीमा बताने के लिए –

मैं यह काम दो दिन में पूरा करूँगा ।

यह घर पाँच साल में बन पाया ।

वह दस मिनट में लौट आएगा ।

(ग) दो से अधिक की तुलना में स्थान या स्तर बताने के लिए –
उन लड़कों में तुम्हारा लड़का अच्छा है।
सारे कपड़ों में यह सब से सुन्दर है।
कक्षा में मणि सब से छोटा है।

(घ) मूल्य-सीमा बताने के लिए –
यह खिलौना दस रुपए में मिलेगा।
पचास रुपए में यह कपड़ा ले सकते हो।
मैंने यह गाड़ी सात हजार रुपए में खरीदी है।

(ङ) किसी भाव या स्थिति को बताने के लिए –
पाँच दिन से यह आदमी बेहोशी में है।
कई दिनों से वह चिन्ता में डूबा हुआ है।

7. पढ़िए और समझिए :

क) गाय हिन्दुओं का एक पवित्रा पशु है ।
ख) भैंस का रंग अधिकतर काला होता है ।
ग) कुत्ता बहुत उपयोगी घरेलू जानवर है ।

उपर्युक्त वाक्यों में 'पवित्र', 'काला', 'घरेलु' शब्द पशु, भैंस और जानवर की विशेषता बताते हैं । ऐसे नामबोधक संज्ञा शब्दों की विशेषता बतानेवाले शब्दों को विशेषण कहते हैं ।

G1J3P6

पाठ - पाँच

पंचायती-राज

पंचायत, पंच, सदस्य, हैसियत, ग्रामोत्थान, व्यवस्था, महत्ता, स्वतन्त्रता, पुनर्जीवित, स्तर, संस्था, परिषद, माध्यम, कल्याण, सुधार, जन-हित, सीढ़ी, अन्तर्गत, प्रौढ़-शिक्षा, कृषि, निर्माण, साक्षर, अखबार, तकनीक, उत्पादन, सम्पन्न, प्रगति, बीज, खाद, पर्याप्त, उपलब्ध, मरम्मत, नामांकन, अदालत, न्याय-पंचायत, वादी, प्रतिवादी, फैसला, परमेश्वर, निपटाना, निबटना ।

पंचायती-राज का अर्थ, पंचायत के द्‌वारा शासन है। गाँव के पाँच लोगों की एक सभा को पंचायत कहते हैं और उन पाँचों को पंच कहते हैं। पंच पंचायत के सदस्य की हैसियत से ग्रामवासियों के आपसी झगड़े निपटाते हैं और ग्रामोत्थान के बहुत सारे कार्य करते हैं।

भारत में पंचायती-राज की व्यवस्था नई नहीं है । प्राचीन काल से भारत के प्रत्येक गाँव में ग्राम-पंचायत की व्यवस्था चली आ रही है। अंग्रेजों के शासन काल में पंचायत की महत्ता घटा दी गई थी और उसे शक्तिहीन बना दिया गया था। अब स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद पंचायती-राज की व्यवस्था पुनर्जीवित की गई है ।

पंचायती -राज में तीन स्तर की संस्थाएँ काम करती हैं। ये हैं – ग्राम-पंचायत, ब्लॉक-समिति और जिला-परिषद। ग्राम-पंचायत ग्राम-स्तर पर काम करती है। ब्लॉक-समिति ब्लॉक-स्तर पर काम करती है। जिला-परिषद जिला-स्तर पर काम करती है। इन संस्थाओं का शासन से सीधा सम्बन्ध नहीं होता । ये चुने हुए सदस्यों के माध्यम से अपने लिए नियम और जनता के कल्याण की योजनाएँ बनाती हैं । इनके द्वारा ग्राम-सुधार और जन-हित सम्बन्धी अनेक कार्य किए जाते हैं। ऐसे कार्यों से गाँव का उत्थान होता है ।

पंचायत गाँव के उत्थान की पहली सीढ़ी है। पंचायती-राज के अन्तर्गत प्रौढ़-शिक्षा, कृषि-विकास, सड़क-निर्माण, स्वास्थ्य-व्यवस्था, बिजली और पीने के पानी की अच्छी व्यवस्था आदि से सम्बन्धित कार्य आते हैं । प्रौढ़-शिक्षा के माध्यम से गाँव के प्रौढ़ लोगों को साक्षर बनाया जाता है। इससे गाँव के किसान और मजदूर अपना हित-अहित स्वयं समझ सकते हैं। वे अखबार पढ़ सकते हैं और कृषि के क्षेत्र में आधुनिक तकनीक और मशीनों का प्रयोग आसानी से कर सकते हैं ।

कृषि ग्रामवासियों का मुख्य व्यवसाय है। कृषि का उत्पादन बढ़ाने से देश सम्पन्न होता है। इसलिए पंचायत कृषि में प्रगति लाने का कार्य करती है। यह अच्छे बीज, खाद आदि पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराने की व्यवस्था करती है। यह समय पर खेतों में पानी पहुँचाने का काम भी करती है।

गाँवों को जोड़ने वाली सड़कों के निर्माण और छोटे-छोटे मार्गों की मरम्मत की व्यवस्था भी पंचायती-राज के अन्तर्गत आती है। पंचायत गाँवों में बिजली पहुँचाने और गाँवों के मार्गों पर बल्ब लगवाने का काम करती है। यह ग्रामवासियों और पशुओं के स्वास्थ्य की व्यवस्था करती है। पंचायत के द्वारा स्वास्थ्य-केन्द्र खोले जाते हैं । पंचायत गाँव के स्तर पर जन्म और मृत्यु के नामांकन का कार्य भी करती है।

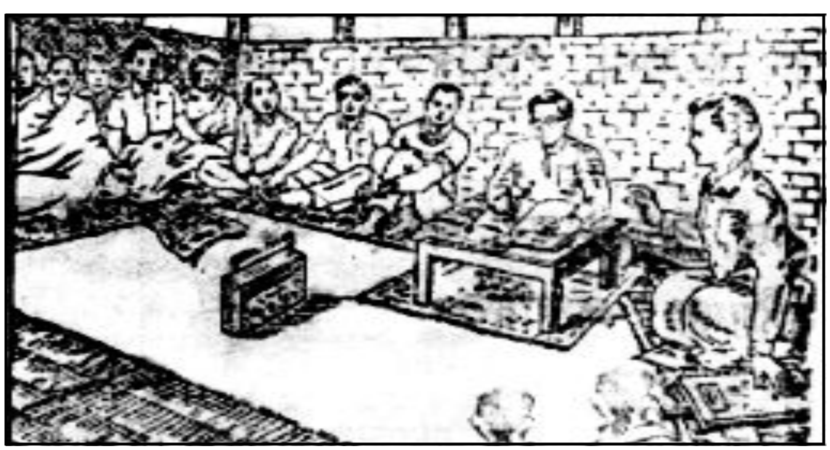

पंचायती-राज के अन्तर्गत एक अदालत भी होती है। उसे न्याय-पंचायत कहते हैं। चार-पाँच ग्राम-पंचायतों के लिए एक न्याय-पंचायत होती है। इसके भी पाँच सदस्य होते हैं। यह ग्रामवासियों के बीच के झगड़े निपटाती है। यहाँ झगड़े निबटने में बहुत कम समय लगता है। पंच वादी-प्रतिवादी की बातें ध्यान से सुनते हैं और अपना निर्णय सुना देते हैं। ग्रामवासी पंचों के फैसले को सही मानते हैं और स्वीकार कर लेते हैं। पंचों में परमेश्वर है और उनका फैसला परमेश्वर का फैसला है, ऐसा ग्रामवासी सोचते हैं।

असल में, पंचायती-राज ग्रामोत्थान की योजना को सफल बनाने की एक व्यवस्था है।

प्रश्न - अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

हैसियत = सामर्थ्य, योग्यता ।
उत्थान = बढ़ती, उठना, बल-वैभव की वृद्धि ।
ग्रामोत्थान = गाँव की बढ़ती ।
व्यवस्था = प्रबन्ध, इन्तजाम ।
महत्ता = बड़प्पन, महिमा, गुरुता ।
माध्यम = मध्य का, साधन ।
कल्याण = मंगल, भलाई ।
सीढ़ी = ऊँचे स्थान पर पहुँचने के लिए बना हुआ पायों का सिलसिला, सोपान ।
साक्षर = शिक्षित, पढ़ा-लिखा ।
व्यवसाय = प्रयास, प्रयत्न, व्यापार, कारबार ।
खाद = पेड़-पौधों के लिए खाद्य रूप-वस्तु ।
उपलब्ध = मिला हुआ, प्राप्त ।
नामांकन = नाम लिखना, रेजिस्ट्रेशन ।
अदालत = न्यायालय ।
वादी = मुकदमा चलाने वाला ।
प्रतिवादी = विरोध करने वाला, वादी की बात का उत्तर देने वाला ।
फैसला = निर्णय, मुकदमे का निर्णय सुनाना ।
न्याय = मामले में दोनों पक्षों की सच्चाई, झुठाई आदि के अनुसार किया गया निर्णय ।

2. उत्तर दीजिए :

(क) पंचायती-राज का क्या अर्थ है ?

(ख) पंचायत किसे कहते हैं ?

(ग) पंच क्या करते हैं ?

(घ) भारत में ग्राम-पंचायत की व्यवस्था कब से चली आई है ?

(ङ) पंचायती-राज की व्यवस्था कब पुनर्जीवित की गई है ?

(च) पंचायती-राज में कौन-कौन सी संस्थाएँ किस स्तर पर काम करती हैं ?

(छ) संस्थाओं द्वारा कौन-से कार्य किए जाते हैं ?

(ज) पंचायत किसकी पहली सीढ़ी है ?

(झ) पंचायती-राज के अन्तर्गत कौन-कौन से कार्य आते हैं ?

(ञ) प्रौढ़-शिक्षा से क्या-क्या लाभ होते हैं ?

(ट) पंचायत कृषि में प्रगति लाने के लिए क्या-क्या काम करती है ?

(ठ) पंचायत गाँव के लिए क्या-क्या काम करती है ?

(ड) न्याय-पंचायत क्या है ?

(ढ) न्याय-पंचायत में कितने सदस्य होते हैं ?

(ण) न्याय-पंचायत कौन-सा काम करती है ?

(त) ग्रामवासी पंचों के बारे में क्या सोचते हैं ?

(थ) मणिपुर के राजा-महाराजाओं के शासनकाल में ''चैराप'' और ''कुचु'' से क्या तात्पर्य है?

(द) मणिपुर के ग्रामीण क्षेन्नों में 'खुन्दिन्नबा' का क्या महत्व है ?

3. *वाक्यों में प्रयोग कीजिए :*

सदस्य --

हैसियत --

व्यवस्था --

महत्ता --

माध्यम --

कल्याण --

साक्षर --

प्रगति --

पर्याप्ति --

फैसला --

4. ***वाक्य पूरा कीजिए :***

(क) भारत में पंचायती-राज की .... ।

(ख) पंचायती-राज में तीन .... ।

(ग) प्रौढ़-शिक्षा के माध्यम से .... ।

(घ) चार-पाँच ग्राम-पंचायतों के लिए .... ।

(ङ) पंचायती-राज ग्रामोत्थान की .... ।

5. ***सही कथन के आगे (√) का निशान और गलत कथन के आगे (×) का निशान लगाइए :***

(क)पंचायती-राज का अर्थ, पंचायत के द्वारा शासन है। ☐

(ख)अंग्रेजों के शासन-काल में पंचायत की महत्ता बढ़ा दी गई थी। ☐

(ग)पंचायत गाँव के उत्थान की पहली सीढ़ी है। ☐

(घ) कृषि ग्रामवासियों का मुख्य व्यवसाय है। ☐

(ङ) एक-एक ग्राम-पंचायत के लिए एक-एक न्याय-पंचायत होती है। ☐

6. **पढ़िए और समझिए :**

करना	**कराना**	**करवाना**
बनना	**बनाना**	**बनवाना**
लिखना	**लिखाना**	**लिखवाना**
पढ़ना	**पढ़ाना**	**पढ़वाना**
सुनना	**सुनाना**	**सुनवाना**
पीटना	**पिटाना**	**पिटवाना**
खाना	**खिलाना**	**खिलवाना**
पीना	**पिलाना**	**पिलवाना**

7. **ध्यान से पढ़िए और समझिए :-**

क) गाँव के पाँच लोगों की एक सभा को पंचायत कहते हैं ।

ख) प्रत्येक गाँव में पंचायती राज की व्यवस्था होती है ।

ग) पंचायत ग्रामवसियों के आपसी झगड़े निपटाती है ।

घ) ग्राम पंचायत ग्राम -स्तर पर काम करती है ।

ङ) कृषि ग्रामवासियों का मुख्य व्यवसाय है ।

उपर्युक्त वाक्यों में कहते हैं, होती है, निपटाती है, करती है, है आदि से कोइन कोइ काम किए जाने का बोध होता है । जिस शब्द से किसी कार्य का करना या होना प्रकट हो, उसे क्रिया कहते हैं ।

पाठ - छह

निङोन चाक्कौबा

> कार्तिक, शुक्ल, द्वितीया, मायका, इकलौती, मुहल्ला, नारियल, अलंकार, बिस्तर, अनजानी, सुसज्जित, अपरिचित, रिश्ता, छलछला।

याइखोन्बा आठ साल का लड़का है । एक दिन शाम को उसने अपनी माँ से पूछा, ''माँ, निङोन चाक्कौबा क्या है ?'' माँ ने उत्तर दिया, ''निङोन चाक्कौबा मणिपुर का एक त्योहार है। यह कार्तिक शुक्ल द्वितीया को मनाया जाता है। इस त्योहार के दिन विवाहित स्त्रियाँ अपने-अपने मायके जाती हैं और भाइयों तथा परिवार के अन्य सदस्यों के साथ सामूहिक भोजन करती हैं।''

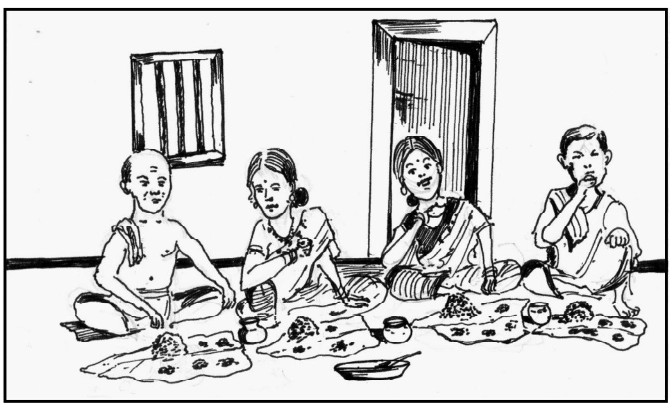

अपनी माँ की बात सुनकर याइखोन्बा ने फिर पूछा, ''माँ, मेरी दीदी कहाँ है ?''

माँ ने हँस कर उत्तर दिया - ''अरे बेटा ! तुम्हारी कोई दीदी नहीं है। तुम मेरी इकलौती सन्तान हो।''

याइखोन्बा उदास होकर बोला - ''तो हमारे घर में निङोन चाक्कौबा नहीं मनाया जाएगा।'' यह कहकर वह चुपचाप अपने कमरे में चला गया ।

तीन दिन के बाद निङोन चाक्कौबा के दिन सारे मुहल्ले में हलचल मचने लगी। विवाहित स्त्रियाँ फल, पान, नारियल, केला और मिठाइयाँ लेकर अपने बच्चों के साथ

अपने- अपने मायके पहुँचने लगीं। वे अच्छे-अच्छे वस्त्र और अनेक प्रकार के अलंकार पहन कर आ रही थीं। सुबह के आठ बजने को हो आए थे। लेकिन याइखोन्‌बा बिस्तर से नहीं उठा था। थोड़ी देर बाद याइखोन्‌बा ने एक अनजानी आवाज सुनी। उसके कमरे में एक सुसज्जित स्त्री उसकी माँ के साथ खड़ी थी। माँ ने मुस्करा कर याइखोन्‌बा से कहा - ''अरे बेटा, देखो, कौन है! तुम्हारी दीदी बहुत दूर से आई है। उठो, आज निङोन चाक्कौबा का दिन है।''

याइखोन्‌बा ने उस अपरिचित स्त्री को आश्चर्य के साथ देखा। उस स्त्री ने याइखोन्‌बा से कहा - ''भैया! मैं तुम्हारी दीदी हूँ। भले ही हम दोनों को एक ही माँ-बाप ने जन्म नहीं दिया, फिर भी हम दोनों एक ही मातृभूमि की सन्तान हैं। मैं पहाड़ी क्षेत्र में जन्मी और तुम मैदानी क्षेत्र में। हम दोनों के बीच भाई-बहन का अटूट रिश्ता है। क्या तुम इस रिश्ते को तोड़ना चाहते हो ?''

याइखोन्‌बा की आँखों में एक अजीब-सी चमक आने लगी। उसने तुरन्त कहा- ''दीदी! आप पहले क्यों नहीं आती थीं ?''

दीदी की आँखें छलछला आईं। उसने याइखोन्‌बा को गले लगा कर कहा - ''भैया! देर से ही सही, मैं तुम्हारे पास आई हूँ। तुम बुरा मत मानो।''

भाई-बहन के प्रेम को देखकर माँ की आखें भी भर आईं।

प्रश्न - अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

कार्तिक = हिन्दू वर्ष का आठवाँ महीना।

शुक्ल = सफेद, महीने के दो भागों में से वह भाग जिसमें चन्द्रमा की कला प्रतिदिन बढ़ती है।

द्वितीया = महीने के हर पक्ष की दूसरी तिथि।

इकलौता = अपने माँ-बाप का अकेला ।

सन्तान = औलाद ।

मुहल्ला = शहर, कसबे या गाँव का एक भाग ।

अलंकार = सजावट, आभूषण , गहना ।

सुसज्जित = अच्छी तरह सजाना ।

अपरिचित = अज्ञात, अजनबी ।

रिश्ता = सम्बन्ध, नाता ।

छलछलाना = आँखों में आँसू भर आना ।

2. उत्तर दीजिए :

(क) निङोन चाक्कौबा कब मनाया जाता है ?

(ख) निङोन चाक्कौबा कैसा त्योहार है ?

(ग) याइखोन्बा क्यों उदास हो जाता है ?

(घ) निङोन चाक्कौबा के दिन विवाहित स्त्रियाँ क्या करती हैं ?

(ङ) माँ ने मुस्करा कर याइखोन्बा से क्या कहा ?

(च) याइखोन्बा ने क्या देखा ?

(छ) अपरिचित स्त्री ने याइखोन्बा से क्या कहा ?

(ज) याइखोन्बा ने अपरिचित स्त्री को क्या उत्तर दिया ?

(झ) माँ की आँखें क्यों भर आईं ?

(ञ) भाइ-बहन के प्रेम से सम्बन्धित भारत के किसी दूसरे त्योहार का नाम बताइए ।

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

मायका --------------------------------------

इकलौती --------------------------------------

मुहल्ला --

अलंकार --

बिस्तर --

अनजानी --

अपरिचित --

रिश्ता --

सामूहिक --

4. खाली जगह भरिए :

(क) निङोन चाक्कौबा कार्तिक .... मनाया जाता है।

(ख) थोड़ी देर बाद .... आवाज सुनी।

(ग) फिर भी हम दोनों .... सन्तान हैं।

(घ) याइखोन्बा की आँखों में .... आने लगी।

(ङ) भाई-बहन के प्रेम का .... भी भर आईं ।

5. सही कथन चुनिए और लिखिए :

(क) निङोन-चाक्कौबा में सामूहिक भोजन होता है।

(ख) याइखोन्बा अपनी माँ को इकलौती सन्तान है।

(ग) निङोन-चाक्कौबा के दिन याइखोन्बा जल्दी उठा।

(घ) याइखोन्बा के सामने एक अपरिचित स्त्री खड़ी थी।

(ङ) भाई-बहन के प्रेम को देख कर माँ को हँसी आई।

....

....

....

....

....

6. पढ़िए और समझिए :

भाई और बहन	=	**भाई-बहन**
माँ और बाप	=	**माँ-बाप**
माँ और बेटी	=	**माँ-बेटी**
बाप और बेटा	=	**बाप-बेटा**
दादा और दादी	=	**दादा-दादी**
नाना और नानी	=	**नाना-नानी**
चाचा और चाची	=	**चाचा-चाची**

7. ध्यान से पढ़िए और समझिए :

i) वे **अच्छे -अच्छे** पहनते हैं ।

ii) दीदी की आँखें **छलछला** आई ।

iii)मुहल्ले में **हलचल** मचने लगी ।

iv) वह **चुपचाप** अपने कमरे में चला गया ।

v) वह **धीरे-धीरे** जाता है ।

उपर्युक्त वाक्यों में 'अच्छे-अच्छे' , 'छलछला', 'हलचल', 'चुपचाप' और 'धीरे-धीरे' क्रमश : पहनना, आना, मचना , चलना और जाना क्रिया शब्द की विशेषता बताते हैं । इस तरह किसी क्रिया शब्द की विशेषता बतानेवाले शब्द को क्रियाविशेषण कहते हैं ।

पाठ - सात

मणिपुर की धरती

स्वर्ग, धरती, प्रकृति, गोद, गाथा, संस्कृति, उजाला, असंख्य, कोष, कण, रण, सजना, सँवरना, संभालना, वारना।

स्वर्ग से बढ़ कर ।
मणिपुर की धरती ।
प्रकृति की गोद में ।
सजती सँवरती ।।

वीरता की गाथाएँ ।
संस्कृति के उजाले ।
ज्ञान के असंख्य कोष ।
इसीने संभाले ।।

पाओना की वीरता ।
गूँजती कण-कण में ।
शत्रु थे काँप उठे ।
जिसे देख रण में ।।

इस प्यारी भूमि के ।
सपने हैं न्यारे ।
उन्हें पूर्ण करने को ।
सब कुछ हम वारें ।।

प्रश्न - अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

धरती	=	पृथ्वी, भूमण्डल ।
गोद	=	आँचल ।
गाथा	=	कथा ।
उजाला	=	प्रकाश, रोशनी ।
असंख्य	=	अगणित, बेहिसाब ।
कोष	=	खजाना, संचित धन ।
कण	=	बहुत छोटा टुकड़ा, रोम ।
रण	=	युद्ध, लड़ाई ।
सँवरना	=	सज्जित होना ।
संभालना	=	रक्षा करना, पालन करना ।
वारना	=	बलिदान करना ।

2. उत्तर दीजिए :
   (क) कहाँ की धरती स्वर्ग से बढ़ कर होती है ?
   (ख) मणिपुर की धरती कहाँ सजती-सँवरती है ?
   (ग) मणिपुर की धरती ने क्या-क्या सम्भाल रखे हैं ?
   (घ) कण-कण में क्या गूँजती है ?
   (ङ) किसे देखकर शत्रु काँप उठे थे ?

(च) बच्चे किसके लिए सब-कुछ बलि देने को तैयार हैं ?

(छ) मणिपुर में लोक्ताक झील का क्या महत्व है ?

(ञ) मणिपुर के किसी एक दर्शनीय स्थल के बारे में लिखिए ।

3. *वाक्यों में प्रयोग कीजिए :*

स्वर्ग --

धरती --

गोद --

संस्कृति --

उजाला --

कण --

वीरता --

पूर्ण --

रण --

ज्ञान --

4. "मणिपुर की धरती" कविता का मूल भाव अपने शब्दों में लिखिए ।

5. **पूरा कीजिए :**

इस प्यारी .... ।

...।

उन्हें पूर्ण .... ।

.. हम वारें ॥

6. नीचे लिखे विलोम शब्दों को समझिए :

स्वर्ग	-	नरक
शत्रु	-	मित्र
वीरता	-	कायरता
ज्ञान	-	अज्ञान
गुण	-	दोष
सच	-	झूठ
घर	-	बाहर

....

H2C8U2

पाठ -आठ

सिरोइ लिली

प्राकृतिक, सज्जन, शाब्दिक, कुमुदिनी, अनुपम, जरूर, अद्‌वितीय

(कक्षा में शिक्षक छात्रों को मणिपुर की प्राकृतिक सुन्दरता और फूलों के बारे में बता रहे हैं।)

शिक्षक : तुम लोगों ने सिरोइ लिली का नाम सुना है ?

तोम्बा : नहीं सर ।

शिक्षक : अरे ! सिरोइ लिली का नाम तक नहीं सुना ?

तोम्बा : नहीं सर ! हमें किसी ने बताया ही नहीं।

शिक्षक : क्या ङानबा तुम भी नहीं जानते ?

ङानबा : नहीं सर ।

शिक्षक : कोई बात नहीं । मैं आज तुम लोगों को सिरोइ लिली के बारे में बताता हूँ।

तोम्बा :
ङानबा : ठीक है सर ।

शिक्षक : सिरोइ लिली एक फूल का नाम है । यह मणिपुर के अलावा कहीं नहीं पाया जाता।

तोम्बा : सर ! यह बात कब और कैसे पता चली ?

शिक्षक : एफ. किंगडण वार्ड नामक एक सज्जन ने खोज करके सन 1943 में यह बात दुनिया को बताई ।

ङानबा : सर ! क्या सिरोइ लिली का कोई शाब्दिक अर्थ भी है ?

शिक्षक : हाँ ! सिरोइ नामक पहाड़ पर लिली अर्थात् कुमुदिनी-सा खिलने वाला फूल ।

तोम्बा : सर ! सिरोइ पहाड़ कहाँ है ?

शिक्षक : सिरोइ पहाड़ मणिपुर के उख्रुल नामक जिले में है ।

ङन्बा : सर ! सिरोइ पहाड़ पर मुख्य रूप से कौन-सी जाति रहती है ?

शिक्षक : ताङ्खुल नामक जन-जाति ।

ङन्बा : सर ! वे लोग सिरोइ लिली को अपनी भाषा में किस नाम से पुकारते हैं ?

शिक्षक : सिरोइ लिली को ताङ्खुल भाषी ‘‘कसोङ् तिमरावोन’’ नाम से पुकारते हैं।

ङन्बा : सर ! सिरोइ लिली कितने दिन खिलता है ?

शिक्षक : यह एक साल में लगभग छह सप्ताह ही खिलता है ।

ङन्बा : सर ! किन दिनों ?

शिक्षक : मई महीने के लगभग पहले सप्ताह से जून के मध्य तक ।

तोम्बा : सर ! क्या सिरोइ पहाड़ पर केवल सिरोइ लिली ही खिलता है ?

शिक्षक : नहीं, वहाँ सिरोइ लिली के अलावा अन्य फूल भी खिलते हैं ।

ङन्बा : सर ! फूलों से भरा सिरोइ पहाड़ बहुत सुन्दर दिखता होगा ।

शिक्षक : हाँ , अनुपम ! क्या तुम लोग सिरोइ लिली नहीं देखना चाहते ?

ङन्बा :
तोम्बा :] हम जरूर देखना चाहते हैं । आप हमें सिरोइ लिली दिखाइए ।

शिक्षक : ठीक है, मैं तुम लोगों को वहाँ ले जाऊँगा और संसार में अद्‌वितीय उस फूल को दिखाऊँगा ।

ङन्बा :
तोम्बा :] जी ! धन्यवाद ।

प्रश्न – अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

सज्जन = कुलीन व्यक्ति, भला आदमी ।

शाब्दिक = शब्द सम्बन्धी।

कुमुदिनी = कमल जैसा पानी में उगने वाला एक प्रकार का फूल, जो रात में खिलता है ।

अनुपम = बेजोड़, सर्वोत्तम ।

अद्वितीय = बेजोड़, अनोखा, जैसा कोई दूसरा न हो ।

2. उत्तर दीजिए :

(क) सिरोइ लिली क्या है ?

(ख) सिरोइ लिली का शाब्दिक अर्थ क्या है ?

(ग) सिरोइ लिली को ताङ्खुल भाषी किस नाम से पुकारते हैं ?

(घ) सिरोइ पहाड़ कहाँ है ?

(ङ) सिरोइ लिली कितने दिन खिलता है ?

(च) सिरोइ लिली कब खिलता है ?

(छ) ''सिरोइ लिली मणिपुर के अलावा कहीं नहीं पाया जाता।'' - यह बात किसने कब बताई ?

(ज) ताङ्खुल भाषा कहाँ बोली जाती है ?

(झ) मणिपुर के पाँच जनजातियों के नाम बताइए ।

(ञ) मणिपुर के पाँच स्थानीय फूलों के नाम बताइए ।

3. ***वाक्यों में प्रयोग कीजिए :***

प्राकृतिक --

अलावा --

[illegible] --

[illegible] --

[illegible] --

[illegible] --

4. [illegible] :

[illegible]	[illegible] का नाम है। मणिपुर के अलावा कहीं पाया जाता। [illegible] में [illegible] है। [illegible] के [illegible] पर [illegible] है। [illegible] "[illegible]" नाम से [illegible] हैं।

....

....

....

....

....

5. [illegible] :

(क) [illegible] .... [illegible] है।
([illegible]\[illegible])

(ख) सिरोइ लिली साल में लगभग छह .... ही खिलता है।
(दिन/सप्ताह)

(ग) सिरोइ पहाड़ पर .... खिलते हैं।
(केवल सिरोइ लिली/अन्य फूल भी)

6. **पढ़िए और समझिए :**

'भी' का प्रयोग, अतिरिक्त के अर्थ में —

हम भी आए थे।
वह भी जाएगा।
अन्य फूल भी खिलते हैं।
मैं भी देखूँगा।
तुम भी गए थे।

'ही' का प्रयोग, जोर देने के अर्थ में —

तोम्बा ही गया है।
तुम ही आए हो।
मेरे पास ही रहो।
मुझे ही यह काम करना पड़ा।
तुम्हें कोलकाता ही जाना है।

7. ***''भी'' का प्रयोग करके तीन वाक्य बनाइए :***

....

....

....

8. *"ही" का प्रयोग करके तीन वाक्य बनाइए :*

....

....

....

....

S3D4D2

पाठ -नौ

हॉकी

गड़ेरिए, प्रहार, वजन, प्रयुक्त, चमड़ा, परिधि, दौरान, निलम्बित, शामिल, विभक्त , अन्तराल, सहमति, अनुमान, प्रेरक, कृत्रिम, प्रतियोगिता, प्रतिनिधित्व ।

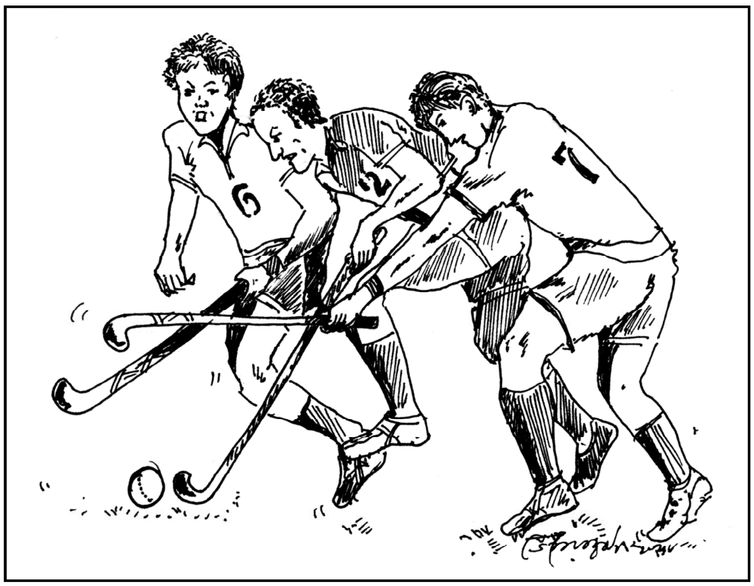

विश्व के प्रमुख खेलों में हॉकी का भी स्थान है । हॉकी शब्द फ्रान्सीसी भाषा के बहुत पुराने शब्द ''होक्केट'' से बना है । इसका अर्थ होता है गड़ेरिए (भेड़ पालक) द्‌वारा हाथ में लकड़ी पकड़ना ।

हॉकी के खेल का मैदान *91.40* मीटर लम्बा और *52.24* मीटर चौड़ा होता है। यह मैदान एक सफेद रंग की पंक्ति से चारों ओर से घिरा होता है। मैदान के चारों कोनों पर *4* फुट ऊँचे चार झण्डे खड़े रहते हैं ।

हॉकी स्टिक का नीचे वाला हिस्सा बाईं तरफ मुड़ा है, जिससे गेंद पर प्रहार किया जाता है । स्टिक का ऊपर का हिस्सा गोलाई लिए होता है। हॉकी की स्टिक का वजन 794 ग्राम होता है । हॉकी के खेल में प्रयुक्त गेंद सफेद चमड़े की होती है, जिसका वजन 163 ग्राम होता है । इस गेंद की परिधि 23.5 से.मी. से अधिक नहीं होनी चाहिए ।

हॉकी की टीम में ग्यारह खिलाड़ी होते हैं। टीम में एक गोली (गोलकीपर) रहता है। खेल के दौरान टीम के दो खिलाड़ियों को बदला जा सकता है, किन्तु निलम्बित खिलाड़ी के स्थान पर दूसरा खिलाड़ी शामिल नहीं किया जा सकता ।

खेल का समय 90 मिनट का होता है, जिसको दो भागों में विभक्त किया जाता है। खेल के बीच ५ मिनट का अन्तराल रखा जाता है, किन्तु दोनों टिमों के कप्तानों की सहमति से १० मिनट भी दिए जा सकते हैं। अन्तराल के बाद दोनों टिमों की दिशा बदल जाती है ।

पुराने समय में हॉकी का खेल लाल मिट्टी के मैदान पर खेला जाता था, पर आजकल इसे कृत्रिम घास के मैदान पर भी खेला जाता है।

मणिपुर में भी इस तरह का खेल खेला जाता है। उसमें स्टिक बाँस की और गेंद बाँस की जड़ की बनी होती है। मणिपुरी भाषा में हॉकी को ''काङ्जै'' कहते हैं।

अब मणिपुर के खिलाड़ी अन्तरराष्ट्रीय हॉकी प्रतियोगिताओं में देश का प्रतिनिधित्व करते हैं। मणिपुर के हॉकी खिलाड़ियों में थोइबा, नीलकमल, टिकेन, सन् 2004 में अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित कुमारी सूर्जलता, महिला ऑलेम्पिक खिलाड़ी सङ्गाइ इबेमहल आदि का नाम उल्लेखनीय है ।

प्रश्न - अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

गड़ेरिया	=	भेड़ पालक।
गेंद	=	कपड़े, रबर, काठ आदि का बना गोला, जिससे लड़के खेलते हैं।
प्रहार	=	आघात, वार ।
वजन	=	भार, तौल ।
चमड़ा	=	चर्म, त्वचा, खाल ।
परिधि	=	लकड़ी आदि का घेरा या बाड़ा।
निलम्बित	=	निकालना, निकाला हुआ ।

अन्तराल	=	बीच का समय।
कृत्रिम	=	बनावटी।
सहमति	=	एक दूसरे का बराबर मत।
प्रेरक	=	प्रेरणा करने वाला।
प्रतियोगिता	=	होड़, प्रतियोगी होने का भाव।
अनुमान	=	अंदाजा।
उल्लेखनीय	=	उल्लेख करने योग्य, बताने योग्य।

2. उत्तर दीजिए :

(क) हॉकी शब्द किस शब्द से बना है ?
(ख) हॉकी के खेल के मैदान की लम्बाई-चौड़ाई कितनी होती है ?
(ग) हॉकी के मैदान के चारों कोनों पर क्या खड़े रहते हैं ?
(घ) हॉकी स्टिक का आकार कैसा होता है ?
(ङ) हॉकी के खेल में प्रयुक्त गेंद किसकी बनी होती है ?
(च) हॉकी की टीम में कितने खिलाड़ी होते हैं ?
(छ) हॉकी के खेल का समय कितने मिनट का होता है ?
(ज) कब हॉकी के खेल में दोनों टिमों की दिशा बदल जाती है ?
(झ) पुराने समय में हॉकी का खेल किसपर खेल जाता था ?
(ञ) मणिपुरी भाषा में हॉकी को क्या कहते हैं ?
(ट) काङ्जै की स्टिक और गेंद किसकी बनी होती हैं ?
(ठ) मणिपुर के कुछ उल्लेखनीय हॉकी खिलाड़ियों के नाम बताइए ।
(ड) मुक्ना काङजै और काङजै में क्या अन्तर है ?

3. ***वाक्यों में प्रयोग कीजिए :***

प्रमुख --

हिस्सा --

प्रहार --

वजन --

निलम्बित --

शामिल --

विभक्त --

अन्तराल --

सहमति --

कृत्रिम --

4. ***सही कथन के आगे (√) का निशान और गलत कथन के आगे (×) का निशान लगाइए :***

(क) हॉकी की स्टिक का नीचे वाला हिस्सा बाईं तरफ मुड़ा होता है। ☐

(ख) स्टिक का ऊपर का हिस्सा गोलाई लिए होता है। ☐

(ग) हॉकी के खेल में बीच में अन्तराल नहीं होता ☐

(घ) पुराने समय में हॉकी का खेल लाल मिट्टी के मैदान पर खेला जाता था। ☐

(ङ) हॉकी की स्टिक बाँस की बनी होती है। ☐

5. ***खाली जगह भरिए :***

(क) हॉकी के खेल में .... की होती है।

(ख) हॉकी की टीम में .... रहता है।

(ग) खेल के बीच .... रखा जाता है।

(घ) मणिपुर में भी .... खेला जाता है।

(ङ) मणिपुरी भाषा में .... कहते हैं।

6. **पढ़िए और समझिये :**

मैं तुम्हारे साथ जाऊँगा ।

वह छत के ऊपर चढ़ता हैं ।

मोहन के बिना वह नहीं खाएगा ।

उपर्युक्त पहले वाक्य में 'साथ' शब्द 'तुम्हारे' के साथ 'मैं' का सम्बन्ध बताता है । दूसरे वाक्य में ऊपर शब्द 'छत' के साथ 'वह' का सम्बन्ध बताता है । तीसरे वाक्य में 'बिना' 'वह' के साथ 'मोहन' का सम्बन्ध बतानेवाला शब्द व्याकरण में **'सम्बन्धबोधक'** कहा जाता है ।

....

S5G6R8

पाठ - दस

उत्तराधिकारी का चुनाव

उत्तराधिकारी, चुनाव, राज-काज, तय, समस्या, विवाद, निर्णय, उचित, राजगद्दी, भतीजा, स्वागत, स्वादिष्ट, बरामदा, पोटली, तरकारी, प्रसादी, पेशाब, आदेश, रिवाज, प्रचलित।

ङइबा 'मकुइ लोङ्दि चरानम' का राजा था। उसके दो पत्नियाँ थीं। दोनों पत्नियों से उसके सात लड़के हुए। सब से छोटे लड़के मङ्लेम्बा का जन्म उसकी पहली पत्नी से हुआ ।

ङइबा बूढ़ा हो गया। वह राज-काज के सारे काम अपने किसी लड़के को सौंपना चाहता था। किन्तु किसको यह भार सौंपा जाए, यह तय करना उसके लिए एक बड़ी समस्या हो गई। उसकी पहली पत्नी कहती थी कि वह बड़ी रानी है, इसलिए उसके बड़े लड़के को राजा बनाया जाना चाहिए। दूसरी पत्नी कहती थी कि उसका बड़ा लड़का सात भाइयों में सब से बड़ा है, इसलिए उसे राजा बनाना चाहिए। विवाद बढ़ता गया। राजा कोई निर्णय नहीं ले पाया।

एक दिन ङइबा ने अपने सातों लड़कों को अपने पास बुलाया और कहा - ''बेटे, तुम लोगों में से किसको अपना उत्तराधिकारी बनाऊँ, यह बात मेरी समझ में नहीं आ रही है। इसलिए तुम सब कौब्रु पर्वत पर जाओ और अपने छोटे चाचा चतिउ से पूछो कि कौन मेरा उत्तराधिकारी होगा। चतिउ जिसको उचित समझेगा, उसीको मैं यह राजगद्दी सौंप दूँगा।''

सातों भाई अपने चाचा चतिउ के पास कौब्रु पर्वत पहुँच गए। उन्होंने अपने चाचा को सारी बातें बता दीं। चतिउ ने अपने भतीजों का अच्छा स्वागत किया और उन्हें स्वादिष्ट खाना खिलाया।

दूसरे दिन सुबह चतिउ ने अपने भतीजों को जल्दी जगाकर कहा- ''बेटे, मैंने बाहर बरामदे में तुम लोगों के लिए सात पोटलियाँ रखी हैं। उन पोटलियों में पकाए हुए चावल और तरकारियाँ हैं। कल रात मैंने ईश्वर की पूजा की थी। उसी की प्रसादी है। तुम लोग एक-एक करके क्रम से अपना-अपना हिस्सा उठा लो। बाहर एक गाय और एक कुत्ता भी बंधे हैं। उन्हें लेकर घर वापस जाओ। रास्ते में जहाँ गाय पानी पीकर पेशाब करेगी और कुत्ता भौंकने लगेगा, वहाँ तुम लोग अपनी-अपनी पोटलियाँ खोल कर खाना खाना। जिसकी पोटली में मुर्गे का सिर मिलेगा, वही तुम्हारे पिता का उत्तराधिकारी होगा और मकुइ लोङ्दि चरानम का राजा बनेगा। इसमें तुम लोग आपस में झगड़ा मत करना। यह ईश्वर का आदेश है। ईश्वर ने ही मुझे यह बात बताई थी। ''

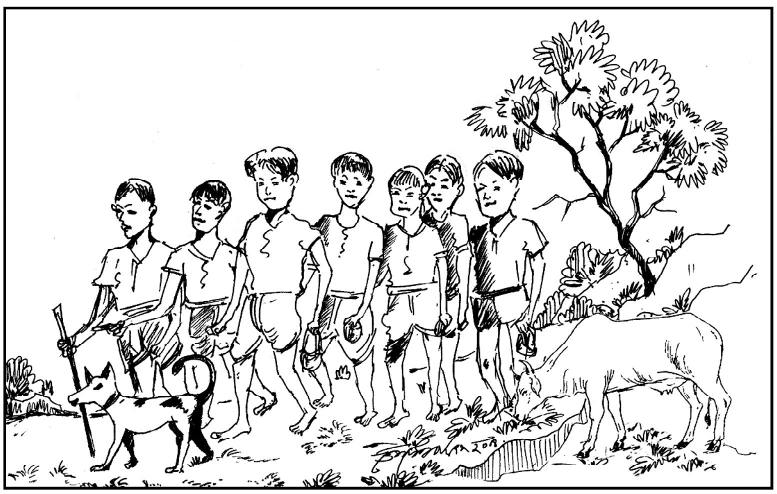

अपने चाचा की बात सुनकर सातों भाइयों ने एक-एक पोटली क्रम से उठाई और गाय तथा कुत्ते को लेकर घर की ओर चले। रास्ते में जब गाय पानी पीकर पेशाब करने लगी और कुत्ता जोर-जोर से भौंकने लगा, तब वे अपनी-अपनी पोटली खोलकर खाना खाने लगे। बड़े भाइयों ने अपने सब से छोटे भाई की पोटली में मुर्गे का सिर पाया। जब वे घर पहुँचे, तब उन्होंने सारी बातें अपने पिता ङुइबा को बता दीं। ङुइबा ने अपने सब से छोटे लड़के मङ्लेम्बा को अपना उत्तराधिकारी चुना और उसे राजा बनाया।

आज तक रोङ्मै जनजाति में यह रिवाज प्रचलित है कि सब से छोटा बेटा ही बाप का उत्तराधिकारी माना जाता है।

प्रश्न - अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

उत्तराधिकारी	=	किसी के बाद उसकी सम्पत्ति पाने का हकदार ,वारिस।
चुनाव	=	चुनने की क्रिया, किसी का पद विशेष के लिए पसन्द किया जाना।
तय	=	निश्चित, निर्णीत।
समस्या	=	कठिन विषय, टेढ़ा मामला।
विवाद	=	बहस, झगड़ा।
निर्णय	=	फैसला।
उचित	=	योग्य, ठीक।
भतीजा	=	भाई का बेटा।
स्वागत	=	अगवानी।
स्वादिष्ट	=	बहुत ही जायकेदार ।
पोटली	=	छोटी गठरी।
तरकारी	=	शाक, सब्जी।
प्रसादी	=	किसी देवता को चढ़ाई हुई वस्तु ।
आदेश	=	आज्ञा, हुकम।
रिवाज	=	प्रथा, रीति, चलन।

2. उत्तर दीजिए :

(क) ङुइबा कौन था ?
(ख) ङुइबा के कितनी पत्नियाँ और कितने लड़के थे ?
(ग) ङुइबा का छोटा लड़का कौन था ?
(घ) ङुइबा क्या चाहता था ?
(ङ) ङुइबा के सामने क्या समस्या थी ?
(च) ङुइबा की पहली पत्नी क्या कहती थी ?
(छ) ङुइबा की दूसरी पत्नी क्या कहती थी ?

(ज) ङुइबा ने अपने सातों लड़कों से क्या कहा ?
(झ) सातों भाई कहाँ पहुँच गए ?
(ञ) चतिउ ने अपने भतीजों से क्या कहा ?
(ट) सातों भाइयों ने कब खाना खाया ?
(ठ) सब से छोटे भाई की पोटली में क्या पाया गया ?
(ड) ङुइबा ने किसको अपना उत्तराधिकारी चुना ?
(ढ) रोङ्मै जनजाति में कैसा रिवाज प्रचलित है ?
(ण) अपनी जाति की किसी एक लोककथा लिखिए ।
(त) मैतै जाति की पाँच लोक कथाओं के नाम बताइए ।

3. ***वाक्यों में प्रयोग कीजिए :***

उत्तराधिकारी ------------------------------------

तय ------------------------------------

समस्या ------------------------------------

विवाद ------------------------------------

स्वागत ------------------------------------

पोटली ------------------------------------

निर्णय ------------------------------------

उचित ------------------------------------

रिवाज ------------------------------------

आदेश ------------------------------------

4. ***सही कथन के आगे (√) का निशान और गलत कथन के आगे (×) का निशान लगाइए :***

(क) ङ्इबा के सात लड़के थे। ☐

(ख) ङ्इबा ने अपने लड़कों को कौब्रु पर्वत पर भेजा। ☐

(ग) लड़कों ने अपने चाचा चतिउ को सारी बातें नहीं बताईं। ☐

(घ) सातों भाइयों ने एक-एक पोटली क्रम से उठाई। ☐

(ङ) रोड़्मै जनजाति में बाप का उत्तराधिकारी बड़ा लड़का ही होता है। ☐

5. ***वाक्य पूरा कीजिए :***

(क) ङ्इबा राज-काज के सारे काम .... ।

(ख) एक दिन ङ्इबा ने अपने सातों .... ।

(ग) सातों भाई अपने चाचा .... ।

(घ) ईश्वर ने ही मुझे .... ।

(ङ) बड़े भाइयों ने अपने सब से छोटे .... ।

6. ***अर्थ लिखिए :***

विवाह = ...

उचित = ...

स्वागत = ...

तरकारी = ...

आदेश = ...

7. **ध्यान से पढ़िए, समझिए और याद रखिए :**

कुत्ता भौंकता है।
घोड़ा हिनहिनाता है।
बिल्ली म्याऊँ-म्याऊँ करती है।
गाय रंभाती है।
हाथी चिंघाड़ता है।
सिंह गरजता है।
बाघ भी गरजता है।
गीदड़ हुआँ-हुआँ करता है।
गधा रेंकता है।
भेड़ मिमियाती है।
बकरी भी मिमियाती है।
चिड़िया चहचहाती है।
कौवा काँव-काँव करता है।
मुर्गा कुकड़ू- कूँ करता है।
कोयल कुकती है।
तोता टें-टें करता है।
कबूतर गुटरगूँ करता है।
मेढक टर्राता है।
साँप फुफकारता है।
मक्खी भिनभिनाती है।

८. **पढ़िए और समझिए :**

i) **ङुइबा एक राजा था और उसके दो पत्नियाँ थीं ।**

ii) **ङुइबा के पास एक समस्या थी कि उसका उत्तराधिकारी अपने बड़े लड़के को बनाया जाए या किसको ।**

iii) **मङ्लेम्बा ङुइबा का सब से छोटा लड़का था लेकिन उसको उत्तराधिकारी बनाया गया ।**

इन उपर्युक्त वाक्यों में और , या, लेकिन शब्द मिलाने का काम करते हैं । इस तरह जो शब्द दो या दो से अधिक पदों , पदबन्धों या उपवाक्यों को जोड़ता है, उसे सम्मुच्चय बोधक या योजक कहते हैं । जैसे - और , तथा , एवं, या, अथवा, लेकिन , परन्तु, किन्तु आदि सम्मुच्चय बोधक हैं ।

....

C7L2H7

पाठ - ग्यारह

खेल-कूद और स्वास्थ्य

कहावत, नवाब, उक्ति, अनिवार्य, आधुनिक, अभिन्न, वास्तव, अत्यन्त, संचार, स्फूर्ति, ताजगी, रोग, सुगठित, अनुभव, खिलाड़ी, मैत्री-भाव, विनम्रता, संयम, मस्तिष्क, सन्तुलन, पाचन-शक्ति।

कभी पहले एक कहावत थी - ''पढ़ोगे-लिखोगे बनोगे नवाब, खेलोगे-कूदोगे बनोगे खराब।'' लेकिन आज के खेलों ने इस उक्ति को गलत सिद्ध कर दिया है। सरकार ने भी शिक्षा में खेल-कूद को अनिवार्य बना दिया है ।

पहले समय में खेल-कूद को पढ़ाई-लिखाई से जोड़ कर नहीं देखा जाता था। लेकिन आज खेल-कूद आधुनिक शिक्षा का अभिन्न अंग बन चुका है। वास्तव में खेल-कूद का हमारे जीवन में अत्यन्त महत्व है ।

खेल-कूद से हमारा शरीर स्वस्थ रहता है। इससे हमारे शरीर में रक्त का संचार बढ़ता है, जिससे शरीर का विकास होता है। छोटे बच्चों को देखो, वे हमेशा खेलते-कूदते रहते हैं। इससे उनको स्फूर्ति और ताज़गी मिलती है। स्वस्थ शरीर ही स्वस्थ मन का घर है। अस्वस्थ शरीर वाले को किसी भी काम में मन नहीं लगता, यहाँ तक कि उसको खाने की भी इच्छा नहीं होती।

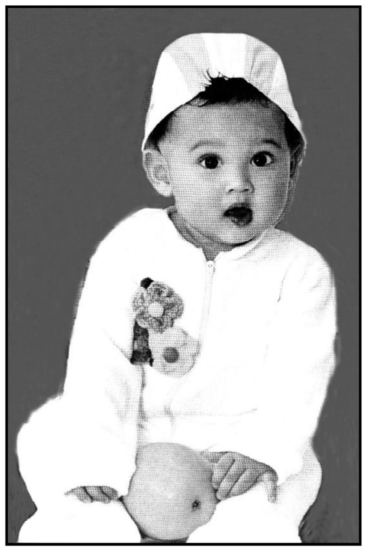

खेल -कूद से हमारा शरीर नीरोग रहता है और पाचन-शक्ति बढ़ती है। इससे हमारा शरीर सुगठित तथा सुन्दर बनता है। खेलते समय हमारा मन खेल-भावना में डूब जाता है। इससे हारने में भी जीत का अनुभव होता है। खेल में भाग लेते समय सभी खिलाड़ी सामाजिक, धार्मिक और भाषा की दूरियाँ पार करके परस्पर मैत्री-भाव से मिलते हैं।

खेलों से विनम्रता, अनुशासन, संयम, साहस और आपसी सहयोग की भावना बढ़ती है। इनसे हमारा शारीरिक ही नहीं, मानसिक विकास भी होता है। शरीर और मस्तिष्क का सन्तुलन बनाए रखने के लिए नियमित खेलना बहुत जरूरी है।

खेल से आयु भी लम्बी होती है।

प्रश्न - अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

कहावत	=	लोकोक्ति , उक्ति, कथन।
नवाब	=	बड़े ठाट-बाट से रहने वाला, राजा, राजकर्मचारी।
उक्ति	=	कथन।
अनिवार्य	=	आवश्यक।
आधुनिक	=	आजकल का, नए जमाने का।
अभिन्न	=	भेद या अन्तर न रखने वाला।
वास्तव	=	असल, निश्चित, सत्य।
अत्यन्त	=	अतिशय, हद से ज्यादा ।
संचार	=	गमन, भ्रमण।
स्फूर्ति	=	मानसिक आवेश, उत्तेजना।
ताजगी	=	नयापन, ताजा होने का भाव।
नीरोग	=	जिसे कोई रोग न हो, स्वस्थ।
अनुभव	=	मन से जानना, महसूस करना, देख-सुनकर प्राप्त ज्ञान ।
विनम्रता	=	सुशील या विनीत होने का भाव ।
संयम	=	नियन्त्रण।
मस्तिष्क	=	भेजा, दिमाग ।
सन्तुलन	=	तौल बराबर होना या रखना।
पाचन-शक्ति	=	भोजन को पचाने की शक्ति।

2. उत्तर दीजिए :

(क) सरकार ने किसको शिक्षा में अनिवार्य बना दिया है ?

(ख) आजकल खेल-कूद किसका अभिन्न अंग बन चुका है ?

(ग) खेल-कूद से क्या लाभ होता है ?

(घ) स्वस्थ शरीर किसका घर है ?

(ङ) अस्वस्थ शरीर वाले को क्या होता है ?

(च) खेल-कूद से हमारे शरीर पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

(छ) खेल में भाग लेते समय सभी खिलाड़ी क्या करते हैं?

(ज) खेलों से कैसी भावना बढ़ती है ?

(झ) नियमित खेलना क्यों जरूरी है ?

(ञ) शरीर किसका माध्यम है ?

(ट) स्वास्थ के लिए 'योगासान' क्यों जरूरी है ।

(थ) नियमित रूप से पैदल चलने से शरीर पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

3. ***वाक्यों में प्रयोग कीजिए :***

अनिवार्य --

आधुनिक --

अभिन्न --

वास्तव --

अत्यन्त --

संचार --

ताजगी --

अनुभव --

विनम्रता --

संयम ---

4. ***सही कथन चुनिए और लिखिए :***

(क) खेल-कूद का हमारे जीवन में अत्यन्त महत्व है।

(ख) स्वस्थ शरीर वाले को किसी भी काम में मन नहीं लगता।

(ग) खेलों से आपसी सहयोग की भावना बढ़ती है।

(घ) खेलों से मानसिक विकास नहीं होता।

(ङ) शरीर ही कर्तव्य की साधना का माध्यम है।

....

....

....

....

....

5. ***तालिका को ध्यान से देखिए, पढ़िए और वाक्य बनाइए :***

खेल-कूद से	*हमारे शरीर में रक्त का संचार बढ़ता शरीरे का विकास होता बच्चों को स्फूर्ति और ताजगी मिलती हमारी पाचन-शक्ति बढ़ती हमारा शरीर सुगठित और सुन्दर बनाता मानसिक विकास भी होता*	*है।*

....

....

....

....

....

....

6. ध्यान से पढ़िए और समझिए :

रक्त का संचार	खाने की इच्छा
आज का खेल	सहयोग की भावना
शरीर का विकास	उसकी आयु
मन का घर	आज की शिक्षा
जीत का अनुभव	बच्चों की जिन्दगी
साधना का माध्यम	कर्तव्य की साधना

7. पढ़िए और समझिए :

अ) ऐं ! वह भी खेलने के लिए यहाँ आ गया ।

आ) वाह ! आज का खेल बहुत सुन्दर है ।

इ) हाय ! आज के खेल में हम हार गये ।

उपर्युक्त वाक्यों में 'ऐं', 'वाह', 'और' 'हाय' से मनोभाव प्रकट किया जाता है । पहले वाक्य में 'ऐं' शब्द से आद्दचर्य का बोध होता है । दूसरे वाक्य में 'वाह' से हर्ष का बोध होता है । तीसरे वाक्य में 'हाय' शब्द से शोक का बोध होता है । इस तरह मनोभाव प्रकट करनेवाले शब्द या पद को विस्मयादिबोधक शब्द कहते हैं । जैसे :- ऐं! अहा ! हा! हाय ! वाह ! हाँ ! हट ! छि: - छि : ! अरे ! आदि ।

....

पाठ - बारह

सफलता की कुंजी

सफलता, कुंजी, पुस्तकालय, समय-सारणी, अन्तर, उपयोग, विधि, सावधानी, अनुशासन, प्रतिकूल, यातायात, पटरी, जेबरा-लाइन, हानि, अव्यवस्था, उत्पन्न, बरतना।

अध्यापक बालकों को पुस्तकालय की जानकारी दे रहे थे। उन्होंने बताया, ''बच्चो, पुस्तकालय में हर विषय की पुस्तकें होती हैं। उनसे हम ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। हमारे स्कूल में भी एक अच्छा पुस्तकालय है। तुम सब को वहाँ जाना चाहिए। तुम्हारी समय-सारणी में पुस्तकालय का अन्तर भी है।''

सनामचा : गुरुजी, पुस्तकालय के उपयोग की विधि क्या है ?

अध्यापक : पुस्तकालय से पुस्तक लेकर तुम घर जा सकते हो। मन करे तो वहीं बैठ कर भी पढ़ सकते हो ।

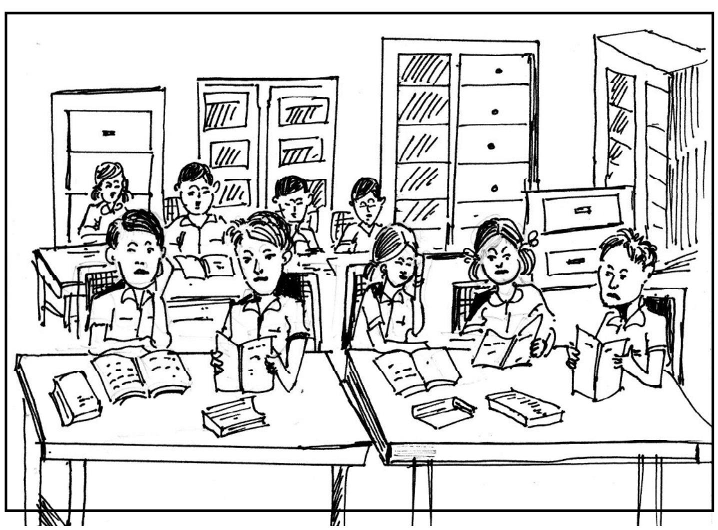

मेमचा : गुरुजी, पुस्तकालय में पुस्तक पढ़ते समय कौन-सी सावधानी बरतनी चाहिए?

अध्यापक : वहाँ बैठ कर पढ़ते समय जोर-जोर से बोल कर नहीं पढ़ना चाहिए। यह पुस्तकालय के अनुशासन के प्रतिकूल है।

अगले दिन अध्यापक यातायात के बारे में जानकारी दे रहे थे। वे बोले, ''बच्चो, सड़क पर कभी भी असावधानी से नहीं चलना चाहिए।''

ङाङ्बी : गुरुजी, सड़क पर चलते समय कौन कौन-सी सावधानी बरतनी चाहिए ?

अध्यापक : सड़क पर हमेशा बाईं ओर की पटरी पर चलना चाहिए । यदि सड़क पार करनी हो तो ''जेबरा-लाइन ''जेबरा क्राँसिंग से पार करनी चाहिए।

जेम्स : गुरुजी, क्या यह सड़क का अनुशासन है ?

अध्यापक : ये यातायात के नियम हैं। इनका पालन करना यातायात के अनुशासन का पालन करना है।

प्रतिमा : गुरुजी, अनुशासन का पालन न करने से क्या हानि होती है ?

अध्यापक : नियम और अनुशासन का पालन न करने से अव्यवस्था उत्पन्न हो जाती है। अनुशासनहीन लोग जीवन में सफल नहीं होते। अनुशासन ही सफलता की कुंजी है।

प्रश्न - अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

कुंजी = ताली, अर्थ खोलने वाली पुस्तक।

समय- सारणी = टाइम टेबल, स्कुल या कालेज में एक चार्ट जो विविध/विषयों की कक्षाओं के समय दिखाना

पुस्तकालय = लाइब्रेरी।

अन्तर = पेरियड।

विधि = कार्य करने का ढंग।

सावधानी = सतर्कता, होशियारी।

अनुशासन = नियन्त्रण, नियम-पालन।

प्रतिकूल = जो अनुकूल न हो, विपरीत ।

यातायात = आना-जाना, गमनागमन।

पटरी = सड़क के किनारे की पैदल चलने की थोड़ी ऊँची और पतली जगह।

जेबरा क्रॉसिंग/जेबरा-लाइन = सड़क के आर-पार सफेद रंग से बनी हुई धारियों की पंक्ति।

हानि = नुकसान, क्षति।

उत्पन्न = जनमा हुआ ।

बरतना = काम में लाना, इस्तेमाल करना।

2. उत्तर दीजिए :

(क) अध्यापक किसकी जानकारी दे रहे थे ?

(ख) पुस्तकालय के उपयोग की विधि क्या है ?

(ग) पुस्तकालय में बैठ कर पढ़ते समय क्या करना चाहिए ?

(घ) सड़क पर चलते समय क्या सावधानी बरतनी चाहिए ?

(ङ) अनुशासन का पालन न करने से क्या हानि होती है ?

(च) अपने स्कूल के पुस्तकालय में कौन से विषय की पुस्तक आपको अच्छी लगती हैं ?

3. ***वाक्यों में प्रयोग कीजिए :***

सफलता --

कुंजी --

उपयोग --

सावधानी --

प्रतिकूल --

यातायात --

पटरी --

हानि --

अव्यवस्था --

उत्पन्न --

4. ***खाली जगह भरिए :***

(क) हमारे स्कूल में भी .... है।

(ख) मन करे तो वहीं .... हो।

(ग) यातायात के नियमों का पालन करना .... है।

5. ध्यान से पढ़िये और समझिए :

जिस चिह से यह ज्ञात हो कि संज्ञ-शब्द पुरुष- जाति का है या स्त्री जाति का उसे लिंग कहते हैं।

अध्यापक बालकों को पुस्तकालय की जानकारी दे रहे थे ।

मेमचा , ङाङबी, प्रतिमा, जेम्स और सनामचा अध्यापक के पास जाती हैं ।

अध्यापक अपने छात्रों की सफलता को कुंजी देते हैं ।

इन उपर्युक्त वाक्यों में 'अध्यापक', 'बालक', 'जेम्स' और 'सनामचा ' से पुरुष जाति का बोध होता है । 'मेमचा' , 'ङाङ्बी' और 'प्रतिमा' से स्त्री जाति का बोध होता हैं । पुरुष बोधक शब्द पुल्लिंग कहलाते हैं और स्त्री बोधक शब्द स्त्रीलिंग । हिन्दी में निण्प्राण वस्तु सूचक शब्द या तो पुल्लिंग होता है या स्त्रीलिंग । जैसे-

'पुस्तकालय' शब्द पुल्लिंग है और 'जानकारी', 'सफलता' और 'कुंजी' शब्द स्त्रीलिंग हैं ।

6. पढ़िये और समझिए :

सफल	-	सफलता
सुन्दर	-	सुन्दरता
उपयोगी	-	उपयोगिता
आवश्यक	-	आवश्यकता
पवित्र	-	पवित्रता
आधुनिक	-	आधुनिकता
अनिवार्य-		अनिवार्यता
महान	-	महानता
मानव	-	मानवता

-'ता' प्रत्यय युक्त भाववाचक संज्ञाएँ स्त्रीलिंग होती हैं ।

………………

पाठ - तेरह

प्यारा देश

किरण, उर्वर, पल, हिलमिल, जगना, ललचाना, सींचना।

भारत जिसका नाम, वही है ।
दुनिया भर का प्यारा देश ।।

सागर और हिमालय मिल कर ।
इसी देश के गुण गाते ।
काश्मीर को देख देवता ।
मन ही मन हैं ललचाते ।।

ब्रह्मपुत्र, गंगा, यमुना का ।
कावेरी, कृष्णा का जल ।
इस भूमि को सींच-सींच कर ।
उर्वर करता है प्रति पल ।।

हम भारत की सन्तानें हैं ।
हिल-मिल कर सब रहते हैं ।
जन्म मिले फिर इसी भूमि पर ।
मन में कहते रहते हैं ।।

प्रश्न - अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

किरण	=	ज्योति से प्रवाहरूप में निकलने वाली रेखा, रश्मि।
उर्वर	=	उपजाऊ।
हिलमिल	=	हिलना-मिलना।
ललचाना	=	मुग्ध करना।
सींचना	=	पेड़-पौधों को पानी देना।

2. उत्तर दीजिए :

(क) कब सारा देश जग जाता है ?
(ख) दुनिया भर का प्यारा देश कौन है ?
(ग) कौन भारत का गुण गाते हैं ?
(घ) काश्मीर को देख देवता क्या करता है ?
(ङ) किससे भारत भूमि को उर्वर करता है ?
(च) बच्चे मन में क्या कहते रहते हैं ?
(छ) मणिपुर की पाँच नदियों के नाम बताइए ।
(ज) भारत के दो पौराणिक पात्र के नाम बताइए ।

3. ***वाक्यों में प्रयोग कीजिए :***

किरण --

प्यारा --

जग --

देवता --

भूमि --

उर्वर --

पल --

जन्म --

ललचाना --

सींचना --

4. ***पूरा कीजिए :***

सगर ………………………………………………………………………… ।

………………………………………………………………………… *गुण गाते।*

काश्मीर को ………………………………………………………………… ।

………………………………………………………………………… *ललचाते।।*

5. *''प्यारा देश'' का मूल भाव अपने शब्दों में लिखिए :*

....

....

....

....

....

6.

ध्यान से पढ़िये ओर समझिए :

किरण	किरणें
नदी	नदियाँ
सन्तान	सन्तानें

उपर्युक्त शब्दों में 'किरण', 'नदी' और 'सन्तान' से एक-एक ही वस्तु का बोध होता है । 'किरणें', 'नदियाँ 'और 'सन्तानें ' से एक से अधिक वस्तुओं का बोध होता है । इस तरह शब्दों के जिस रूप से यदि संख्या बताती है तो उसे वचन कहते हैं ।

शब्द के जिस रूप से एक ही वस्तु का बोध होता है , उसे एकवचन कहते हैं और शब्दके जिस रूप से एक से अधिक वस्तुओं का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं ।

....

D8E7M3

पाठ - चौदह

थाङ्गाल जनरल

स्वतन्त्रता, सेनानी, अधिकांश, तत्कालीन, आक्रमण, हट्टा-कट्टा, नाटा, साँवला, राज्याभिषेक, रणनीति, निपुण, भूमिका, समाधान, भौगोलिक, आचार-विचार, कठिनाई, राजसत्ता, वृद्ध, होंठ, श्रद्धा, निभाना, लटकाना।

थाङ्गाल जनरल मणिपुर के एक स्वतन्त्रता सेनानी थे। उनका जन्म 1806 ई॰ में हुआ था। वे बचपन से ही वीर और साहसी थे। उनकी वीरता एवं साहस देख कर मणिपुर के राजा गम्भीर सिंह ने उन्हें राजपरिवार से जोड़ लिया था। उनके माता-पिता और जन्म-स्थान के बारे में लोग एक मत नहीं हैं। फिर भी अधिकांश इतिहासकारों के मतानुसार वे मैतै जाति के थे। उनके पिता का नाम था काङबम क्षेत्री सिंह और वे काङबम लैकाइ में जन्मे थे। मणिपुर के पोलिटिकल एजेण्ट सर जेम्स जॉनस्टोन के मतानुसार तत्कालीन मणिपुरी राजा ने थाङ्गाल

नामक एक जनजातीय गाँव पर आक्रमण किया था और उस आक्रमण की याद में ही थाङ्गाल के माता-पिता ने उनका नाम थाङ्गाल रखा था। थाङ्गाल के बचपन का नाम था, चिदानन्द।

थाङ्गाल देखने में हट्टे-कट्टे और नाटे थे। उनकी नाक थोड़ी बड़ी थी और आँखें छोटी थीं। वे साँवले रंग के थे।

महाराज गम्भीर सिंह के राजाभिषेक में थाङ्गाल ने बहुत सहयोग दिया था। वे राजनीति और रणनीति में निपुण थे । अपनी कुशलता एवं चतुरता के कारण सन् 1850 को महाराज चन्द्रकीर्ति द्वारा राज्याधिकार प्राप्त करते समय उन्होंने बहुत बड़ी भूमिका निभाई थी। इससे उनका महत्व राजपरिवार एवं राज-दरबार में बढ़ने लगा। वे बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान करने में निपुण थे। उनके पास मणिपुर का भौगोलिक और जनजातियों के आचार-विचारों का ज्ञान भी था।

थाङ्गाल ने मणिपुर जाति को हर कठिनाई से बचाया। उन्होंने मणिपुर को लम्बे समय तक अंगरेजों के हाथों से बचाए रखा। उनमें देश-प्रेम और एक कुशल राजनीतिज्ञ के गुण देख कर मणिपुर के राजकुमार टिकेन्द्रजीत सिंह ने सदा उनका साथ दिया। 27 अप्रैल 1811 ई॰ को मणिपुर की राजसत्ता अंगरेजों के हाथों में पड़ गई। उस समय थाङ्गाल 85 वर्ष के वृद्ध थे। फिर भी उनके देश-प्रेम और राजनीतिक कुशलता से अंगरेज अधिकारी भीतर ही भीतर डरे हुए थे। अंगरेजों ने उनको युवराज टिकेन्द्रजीत के साथ १३ अगस्त, 1811 ई० को मणिपुरी जनता के सामने फाँसी पर लटका दिया।

थाङ्गाल जनरल का नाम आज तक मणिपुरी लोगों के होंठों पर है और सभी उनको श्रद्धा एवं भक्ति के साथ याद करते हैं। थाङ्गाल जनरल का नाम मणिपुर के इतिहास में अमर है ।

प्रश्न – अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

सेनानी	=	सेना-नायक।
अधिकांश	=	अधिकतर।
तत्कालीन	=	उसी समय का ।
आक्रमण	=	चढ़ाई, हमला, टूट पड़ना।

हट्टा- कट्टा	=	मोटा-ताजा, बलवान ।
नाटा	=	छोटे कद का।
साँवला	=	श्याम वर्ण का ।
निपुण	=	चतुर, कुशल।
समाधान	=	निराकरण, सन्देह निवारण।
राजसत्ता	=	राजशक्ति, राजतन्त्र।
वृद्ध	=	बूढ़ा।
होंठ	=	मुँह के बाहर का ऊपर या नीचे का भाग, ओष्ठ।
श्रद्धा	=	प्रेम और भक्तियुक्त पूज्यभाव।

2. उत्तर दीजिए :

(क) थाङ्गाल जनरल का जन्म कब हुआ था ?

(ख) थाङ्गाल के पिता का नाम क्या था ?

(ग) थाङ्गाल के बचपन का नाम क्या था ?

(घ) थाङ्गाल की शारीरिक गठन कैसी थी ?

(ङ) थाङ्गाल किस काम में निपुण थे ?

(च) थाङ्गाल ने किसको हर कठिनाई से बचाया ?

(छ) किस कारण से राजकुमार टिकेन्द्रजीत सिंह ने सदा थाङ्गाल का साथ दिया ?

(ज) कब मणिपुर की राजसत्ता अंगरेजों के हाथों पड़ गई ?

(झ) कब थाङ्गाल को फाँसी पर लटका दिया ?

(ञ) थाङ्गाल जनरल का नाम मणिपुर के इतिहास में क्यों अमर है ?

(ट) अंग्रेजोंने युवराज टिकेन्द्रजीत और थाङगाल जनरल के अलावा किन-किन को फाँसी पर लटका दिया ?

(ठ) 1891 ई. के खोङ्जोम युध्द के बारे में संक्षेप में बताइए ।

3. ***वाक्यों में प्रयोग कीजिए :***

सेनानी ---------------------------------------

अधिकांश ---------------------------------------

तत्कालीन ---

नाटा ---

रणनीति ---

निपुण ---

कठिनाई ---

कुशलता ---

राजसत्ता ---

श्रद्धा ---

4. ***तालिका को ध्यान से देखिए, पढ़िए और ''क'' के वाक्यांशों को सही ढंग से जोड़ कर लिखिए :***

क	ख
थाङ्गाल बचपन से ही	*जाति को हर कठिनाई से बचाया।*
थाङ्गाल देखने में	*मणिपुर के इतिहास में अमर है।*
थाङ्गाल राजनीति	*वीर और साहसी थे।*
थाङ्गाल बड़ी से बड़ी	*हट्टे-कट्टे और नाटे थे।*
थाङ्गाल ने मणिपुर	*और रणनीति में निपुण थे।*
थाङ्गाल जनरल का नाम	*समस्या का समाधान करने में निपुण थे।*

....

....

....

....

....

....

5. ***सही कथन चुनकर लिखिए :***

(क) थाङ्गाल जनरल मणिपुर के एक स्वतन्त्रता सेनानी थे।

(ख) थाङ्गाल गोरे रंग के थे।

(ग) महाराज गम्भीर सिंह के राजाभिषेक में थाङ्गाल ने बहुत सहयोग दिया था।

(घ) थाङ्गाल एक कुशल राजनीतिज्ञ थे।

....

....

....

....

6. ध्यान से पढ़िए और समझिए :

(क) ''को'' का प्रयोग प्रायः सजीवों के साथ होता है, निर्जीवों के साथ प्राय : नहीं। जैसे म

माँ हमको खिलाती है।	माँ खाना खिलाती है।
अध्यापक छात्रों को पढ़ाते हैं।	अध्यापक गणित पढ़ाते हैं।
उन्होंने हमको देखा।	उन्होंने चित्र देखा ।

(ख) किन्तु कभी-कभी सजीवों के साथ ''को'' का प्रयोग नहीं होता। जैसे -

मैने साँप देखा।

हमने एक पागल आदमी देखा।

(ग) जहाँ कर्म पर जोर देना हो, वहाँ ''को'' का प्रयोग होता है। जैसे म

मैं इस आम को खाऊँगा ।

हम ने इस कमरे को साफ किया।

(घ) यदि वाक्य में दो कर्म हों तो सजीव कर्म में ''को'' लगता है और निर्जीव में नहीं लगता । जैसे -

उसने अपने पिता को सारी बातें बता दीं।

अध्यापक विद्‌यार्थियों को हिन्दी पढ़ाते हैं।

अमीर ने गरीब को दान दिया।

जोसेफ ने अमीना को एक फल दिया।

इस प्रकार के वाक्यों में ''को'' लगने वाला सजीव कर्म गौण कर्म है और बिना ''को'' का निर्जीव कर्म मुख्य कर्म है।

7. **पढ़िए और समझिए :**

क) थाङ्गाल जनरल का नाम मणिपुर के इतिहास में अमर है ।

ख) थाङ्गाल बचपन से ही वीर और साहसी थे ।

ग) थाङ्गाल जनरेल का नाम मणिपुरी लोगों के होंठों पर सदा रहेगा ।

इन उपर्युक्त तीन वाक्यों की क्रिया के जिस रूप से अलग-अलग समय का बोध होता है । जैसे 'है' 'थे' और 'रहेगा' ये तीन क्रिया शब्द क्रमश : वर्तमानकाल, भूतकाल और भविष्यत काल का समय बताते हैं। इस तरह क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने या करने का समय जाना जाता है, उसे काल कहते हैं ।

क्रिया के जिस रूप से वर्तमान समय में क्रिया का होना प्रकट हो, उसे वर्तमान काल कहते हैं । इस तरह क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय में क्रिया का होना प्रकट हो, उसे भूतकाल कहते हैं और यदि क्रिया के जिस रूप से आनेवाले समय में क्रिया का होना प्रकट हो तो उसे भविष्यत काल कहते हैं । जैसे :

वर्तमान काल	भूतकाल	भविष्यतकाल
जाता	गया	जायेगा
खेलता	खेला	खेलेगा
देखता	देखा	देखेगा
पाता	पाया	पायेगा
पढ़ता	पढ़ा	पढ़ेगा

पाठ - पन्द्रह

मिजोरम के लोक-नृत्य

पूर्वोत्तर, कुंआरा, सिरा, लय, कदम, भोज, कामना, उत्साह, टकराना, लहराना।

मिजोरम पूर्वोत्तर भारत का छोटा-सा सुन्दर पहाड़ी राज्य है। इसका क्षेत्रफल 23,980 वर्ग कि.मी. है। यहाँ लुसाइ, राल्ते, ह्मार, फानाइस, त्वांगलाइस, पाँग, पोवी, लाखेर, रियाङ्, चकमा आदि प्रमुख जनजातियों के लोग निवास करते हैं। मिजो लोग नृत्य और गान में विशेष रुचि रखते हैं। यहाँ अनेक लोक-नृत्य प्रचलित हैं।

चेरोकान मिजोरम का प्रसिद्ध लोक-नृत्य है। इसे हम बाँस-नृत्य कह सकते हैं। इसमें कुंआरे युवक-युवतियाँ नाचते हैं। कुछ युवक-युवतियाँ बाँसों के सिरे पकड़ कर आमने-सामने बैठ जाते हैं। वे संगीत की लय पर बाँस टकराते हैं। शेष युवक-युवतियाँ इन बाँसों के बीच उछल-उछल कर नृत्य करते हैं। यह लुसाइ लोगों का नृत्य है।

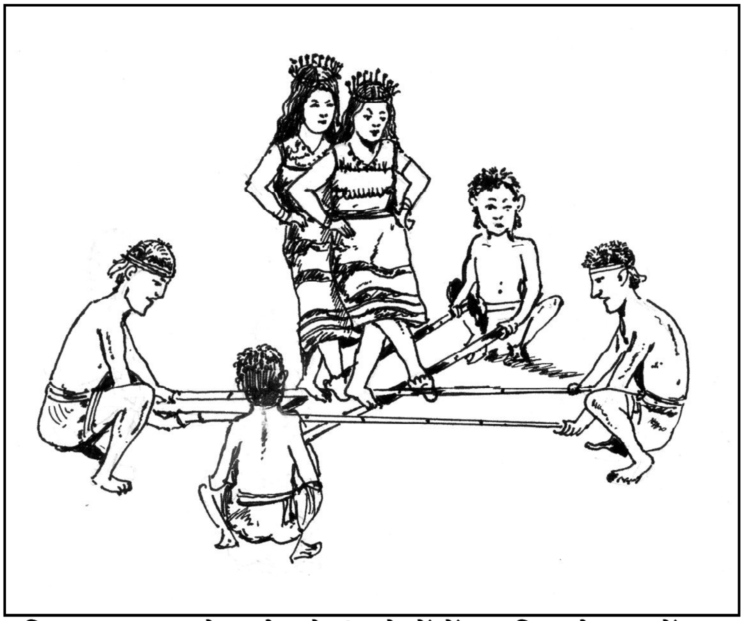

सोलकिया नृत्य लाखेर और पोबी लोगों में प्रचलित है। इसमें युवक-युवतियाँ एक पंक्ति में खड़े होते हैं। ढोल बजते ही दाहिना पैर धीरे से उठा कर हवा में लहराते हैं। फिर उसे वापस ज़मीन पर ले आते हैं। फिर कदम आगे-पीछे चलाते हुए नृत्य करते हैं।

खुवाङ्गछा नृत्य किसी भोज के अवसर पर होता है। इसमें नाच-दल गाँव के रास्ते पर नाचते हुए चलता है।

मिजोरम का सब से लोकप्रिय नृत्य खुवाल्लम है। इसे जीवन भर खुश रहने की कामना से किया जाता है। कहा जाता है कि इस नृत्य को सात बार विशेष अवसरों पर करने वाला स्वर्ग में भी आनन्द पाता है।

मिजोरम में चेराव, पखुलिया आदि लोक-नृत्य भी प्रचलित हैं। सभी लोक-नृत्य आपस में प्रेम और भाईचारा बढ़ाते हैं। इनसे हमें जीने का उत्साह मिलता है ।

प्रश्न - अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

कुंआरा = अविवाहित।
सिरा = अन्त का भाग, छोर।
लय = स्वर, गाने की धुन।
कदम = पाँव, पग।
भोज = बहुत-से लोगों का एक साथ बैठकर खाना।
कामना = इच्छा, चाह।
उत्साह = उमंग, हौसला ।

2. उत्तर दीजिए :

(क) मिजोरम का क्षेत्रफल कितना है ?
(ख) मिजोरम में कौन-कौन-सी प्रमुख जनजातियाँ निवास करती हैं ?
(ग) मिजोरम का प्रसिद्ध लोक नृत्य क्या है ?
(घ) चेरोकान लोक-नृत्य कैसे किया जाता है ?
(ङ) सोलकिया नृत्य किन जातियों में प्रचलित है ?
(च) सोलकिया नृत्य कैसे किया जाता है ?
(छ) खुवाङ्गछा नृत्य किस अवसर पर होता है ?
(ज) खुवाल्लम नृत्य किस कामना से किया जाता है ?
(झ) मिजोरम में कौन-कौन से लोक-नृत्य प्रचलित हैं ?
(ञ) सोलकिया नृत्य जैसा मणिपुरी मैतै जाति में प्रचलित एक लोक नृत्य का नाम बताइए ।
(ट) असम के बिहु नृत्य का संक्षिप्त परिचय दीजिए ।

3. वाक्य पूरा कीजिए :

(क) मिजोरम पूर्वोत्तर भारत का .... ।
(ख) चेरोकान मिजोरम का .... ।
(ग) खुवाङ्गछा नृत्य किसी भोज के .... ।
(घ) मिजोरम का सब से .... ।
(ङ) सभी लोक-नृत्य आपस में .... ।

4. सही कथन के आगे (√) का निशान और गलत कथन के आगे (×) का निशान लगाइए :

(क) मिजो लोग नृत्य और गान में विशेष रुचि रखते हैं। ☐

(ख) चेरोकान नृत्य में कुंआरे युवक-युवतियाँ नाचते हैं। ☐

(ग) सोलकिया लुसाइ लोगों का नृत्य है। ☐

(घ) खुवाल्लम नृत्य जीवन भर खुश रहने की कामना से किया जाता है। ☐

(ङ) लोक-नृत्यों से हमें जीने का उत्साह मिलता है। ☐

5. ध्यान से पढ़िए और समझिए :

''पर'' का प्रयोग कई अर्थों में होता है –

(क) स्थान-सूचक क्रिया-विशेषण में किसी वस्तु का आधार बताने के लिए अर्थात् ऊपर का अर्थ प्रकट करने के लिए, जैसे।

मेज पर पुस्तकें हैं।

वह कुर्सी पर खड़ा है।

बन्दर पेड़ पर बैठता है।

(ख) कारण-सूचक क्रिया-विशेषण में, जैसे –

मेरे कहने पर वह गया ।

अच्छा लड़का बनने पर उन्नति होगी।

झूठ बोलने पर मार खाओगे ।

(ग) दूरी का भाव प्रकट करने के लिए, जैसे –

बाजार यहाँ से चार मील की दूरी पर है।

यह गाँव शहर से कितनी दूरी पर है ?

एक-एक मील की दूरी पर एक-एक तालाब है।

(घ) समय-सूचक क्रिया-विशेषण में, जैसे –

मैं ठीक समय पर आऊँगा ।

वह ठीक चार बजकर बीस मिनट पर जाएगा।

काम पूरा हो जाने पर जल्दी लौट आओ।

6. नीचे की तालिका के आधार पर अधिकतम वाक्य बनाइए :

वे कुर्सी वह पैसे मेरे कहने मेरे आने पानी ठण्डा हो जाने तोम्बा हम चार कि.मी. की दूरी बच्चों	पर	बैठते हैं। मरता है। वह लौट गया। तुम जाना। बच्चे को पिलाना। हँसता है। मेरा घर है। क्रोध मत करो।

....

....

....

....

....

....

....

....

W1R6E1

पाठ - सोलह

हमारी विधान-सभा

विधानसभा, भवन, विधायक, योजना, विधान, मतदान, सदस्य, बैठक, अध्यक्ष, संविधान, सत्ता-पक्ष, मुख्य-मन्त्री, मन्त्रिमण्डल, नजर, विपक्ष, सदन, परिषद, लोकतन्त्र, प्रतीक ।

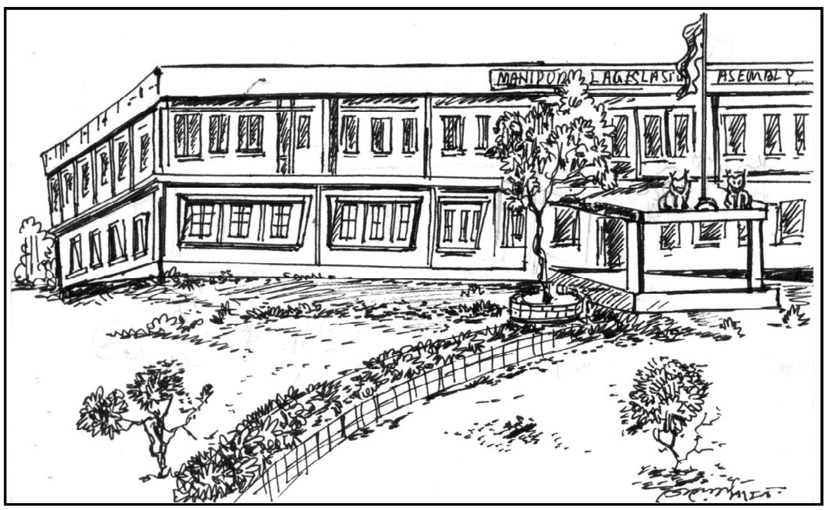

अध्यापक : बच्चो, इस भवन को ध्यान से देखो। यह हमारे राज्य, मणिपुर का विधानसभा-भवन है।

थोइबी : गुरुजी, इस भवन में कौन रहता है ?

अध्यापक : यह भवन किसी के रहने के लिए नहीं है। इसमें विधायक बैठते हैं। वे जनता की भलाई की योजनाएँ और विधान बनाते हैं।

रागिनी : गुरुजी, विधायक किसे कहते हैं ?

अध्यापक : चुनाव में मतदान द्‌वारा जो व्यक्ति विधानसभा के सदस्य के रूप में चुना जाता है, उसे विधायक कहते हैं।

रॉबर्ट : गुरुजी, विधानसभा की बैठक कैसे होती है ?

अध्यापक : एक विधायक विधानसभा का अध्यक्ष चुना जाता है। वही संविधान के अनुसार विधानसभा की बैठक बुलाता है। उसके सामने एक ओर मुख्य-मन्त्री, मन्त्रिमण्डल के सदस्य और उनके पक्ष के विधायक बैठते हैं। इसे सत्ता-पक्ष कहते हैं।

रुइबा : दूसरी ओर कौन बैठता है, गुरुजी ?

अध्यापक : दूसरी ओर भी विधायक ही बैठते हैं। ये हमेशा सरकार के कार्यों पर कड़ी नजर रखते हैं। इन्हें विपक्ष कहा जाता है।

समर सेन : गुरु जी, क्या मणिपुर की तरह सब राज्यों में एक ही विधान बनानेवाली सभा होती है ?

अध्यापक : नहीं, कहीं-कहीं विधान बनानेवाली दो सभाएँ होती हैं। एक, विधानसभा। इसे निचला सदन माना जाता है। दूसरी, विधान-परिषद, इसे ऊपरी सदन माना जाता है।

अब्दुल्ला : गुरुजी, राजा के समय तो ऐसा नहीं था ।

अध्यापक : तुम ठीक कहते हो। अब लोकतन्त्र है। जनता अपना शासन स्वयं करती है। विधानसभा उसी का प्रतीक है ।

प्रश्न - अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

विधान = प्रबन्ध, काम करने का ढंग, कानून, प्रणाली।

भवन = घर, स्थान।

विधायक = कार्य करने वाला, कानून बनाने वाला, विधान-सभा का सदस्य।

योजना = कोई काम करने का विचार, कार्यपद्धति की पूर्व कल्पना।

मतदान = चुनाव आदि में विधिवत मत-प्रकाश।

बैठक = बहुत-से लोगों का किसी खास काम के लिए इकट्ठा बैठना, मीटिंग।

संविधान	=	वह विधान तथा मौलिक सिद्धान्तों का समूह, जिसके अनुसार किसी देश या राज्य या संस्था का संघटन, संचालन आदि होता है, कांस्टिट्युशन।
नजर	=	दृष्टि, निगाह
विपक्ष	=	विरोधी पक्ष, विरोधी।
सदन	=	घर, निवास-स्थान।
परिषद	=	सभा, मण्डली।
लोकतन्त्र	=	जनतन्त्र, जनता द्वारा शासन।
प्रतीक	=	प्रतिरूप, जिसपर किसी का आरोप किया गया हो, सिम्बल।

2. उत्तर दीजिए :

(क) विधायक क्या करते हैं ?

(ख) विधायक किसे कहते हैं ?

(ग) विधान-सभा का अध्यक्ष क्या करता है ?

(घ) सत्ता-पक्ष में कौन-कौन होते हैं ?

(ङ) विपक्ष के विधायक क्या करते हैं ?

(च) विधान सभा किसका प्रतीक है ?

(छ) लोक-सभा ओर राज्यसभा में क्या अन्तर है ?

(ज) भारत संविधान का निर्माण किसने किया ?

3. ***वाक्यों में प्रयोग कीजिए :***

विधान-सभा --

योजना --

विधान --

मतदान ---------------------------------------

नजर ---------------------------------------

विपक्ष ---------------------------------------

सदन ---------------------------------------

लोकतन्त्र ---------------------------------------

प्रतीक ---------------------------------------

4. ***खाली जगह भरिए :***

   (क) *विधान-सभा भवन .... नहीं है।*

   (ख) *एक विधायक .... चुना जाता है।*

   (ग) *दूसरी ओर भी .... हैं।*

   (घ) *कहीं-कहीं विधान .... होती हैं।*

5. ***सही कथन चुनिए और लिखिए :***

   (क) *मणिपुर में एक विधान-सभा भवन है।*

   (ख) *विधायक विधान बनाते हैं।*

   (ग) *विधायक विधान-सभा की बैठक बुलाता है।*

   (घ) *विधान-सभा को निचला सदन माना जाता है।*

   (ङ) *विधान-परिषद को ऊपरी सदन माना जाता है।*

....

....

....

....

....

6. ध्यान से देखिए, पढ़िए और समझिए :

एक	पहला	पहले	पहली
दो	दूसरा	दूसरे	दूसरी
तीन	तीसरा	तीसरे	तीसरी
चार	चौथा	चौथे	चौथी
पाँच	पाँचवाँ	पाँचवें	पाँचवीं
छह	छठा	छठे	छठी
सात	सातवाँ	सातवें	सातवीं
आठ	आठवाँ	आठवें	आठवीं
नौ	नवाँ	नवें	नवीं
दस	दसवाँ	दसवें	दसवीं
ग्यारह	ग्यारहवाँ	ग्यारहवें	ग्यारहवीं
बारह	बारहवाँ	बारहवें	बारहवीं

T4P1L8

पाठ - सत्रह

मणिपुर के निवासी

सीमान्त, क्षेत्र, निवासी, सम्प्रदाय, पारम्परिक, प्रायः, धर्मावलम्बी, विविध, अवसर, दैनिक, पोशाक, अधोवस्त्र, चद्दर, अंगोछा, ब्याह, विपरीत, श्राद्ध-कर्म, शोक-प्रकाश, पहनावा, पाठशाला, बुनियादी, शैक्षिक, परिवर्तन, विश्वविद्यालय, अध्ययन, अनुकरणीय।

मणिपुर भारत के उत्तर-पूर्वी सीमान्त क्षेत्र का एक छोटा-सा राज्य है। यहाँ विभिन्न जातियों और धर्मों के लोग रहते हैं। यहाँ के प्रमुख मूल निवासी हैं - मैतै, ताङ्खुल, माओ, कबुइ, ह्मार, पाइते, मरिङ्, अनाल, थादौ, पाङ्ल आदि ।

मैतै मणिपुर की सब से बड़ी जाति है। इस जाति के अधिकांश लोग गौड़ीय सम्प्रदाय के हैं। कुछ लोग पारम्परिक मैतै धर्म को भी मानते हैं। जनजातियाँ प्रायः ईसाई धर्म को मानने वाली हैं। पाङ्ल इस्लाम धर्मावलम्बी है। बाहर के लोग यहाँ के सभी लोगों को 'मणिपुरी' के नाम से जानते हैं।

मणिपुरी लोग विविध अवसरों के लिए अलग-अलग वेश-भूषा का प्रयोग करते हैं। घर में स्त्रियों की दैनिक पोशाक बहुत साधारण है। वे अधोवस्त्र के रूप में विभिन्न रंगों का हलका कपड़ा प्रयोग करती हैं जिसे मणिपुरी में 'फनेक' कहते हैं। शरीर के ऊपर वाले हिस्से के लिए ब्लाउज और उसके ऊपर चद्दर धारण करती हैं। पुरुषों की वेश-भूषा हर स्थान पर करीब-करीब बराबर है - अंगोछा या खुदै, पैण्ट, पाजामा, कुरता, धोती आदि। शादी -ब्याह और अन्य धार्मिक पर्वों पर मैतै लोगों में सफेद धोती और सफेद कुरता प्रचलित हैं। स्त्रियों में बहुत कीमती 'फनेक', ब्लाउज और सुन्दर चद्दर तथा सोने के गहने पहनने का रिवाज है। ठीक इसके विपरीत देव-पूजा, श्राद्ध-कर्म के दिन और शोक-प्रकाश के अवसरों पर पुरुष सफेद वस्त्र पहनते हैं और स्त्रियाँ ''पुङौफनेक'' पहनती हैं तथा सफेद चद्दर ओढ़ती हैं। ऐसे अवसरों पर मणिपुर की जन-जातियाँ अपनी-अपनी प्रचलित प्रथा के अनुसार अलग अलग पहनावे का प्रयोग करती हैं।

मणिपुर में सर चुड़ाचाँद महाराज के शासन-काल से स्त्री-शिक्षा शुरू हुई थी। उन्होंने लड़कियों की पाठशाला में जीवन से सम्बन्धित बुनियादी शिक्षा प्रारम्भ की। आज लड़के- लड़कियों की शिक्षा तथा शैक्षिक जीवन में काफी परिवर्तन आ गया। स्कूल-कॉलेजों, यहाँ तक कि विश्वविद्यालय के स्तर पर भी अध्ययन करने और शिक्षा देने वालों की संख्या बढ़ गई है।

मणिपुरी जन-जीवन में स्त्रियों की महत्वपूर्ण भूमिका संसार के अन्य समाजों के लिए अनुकरणीय है।

प्रश्न - अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

क्षेत्र	=	जमीन, स्थान।
निवासी	=	रहने वाला, बसने वाला।
सम्प्रदाय	=	विशेष धार्मिक मत, किसी मत के अनुयायियों का समूह।
प्रायः	=	लगभग।
धर्मावलम्बी	=	किसी धर्म को अपनाने वाला।
विविध	=	कई तरह का।
अवसर	=	मौका।
पोशाक	=	पहनावा, लिबास।

अधोवस्त्र	=	कमर में बाँध कर पहनने का कपड़ा।
चद्दर	=	चादर, एक प्रकार की ओढ़नी।
अंगोछा	=	देह पोंछने का कपड़ा, गमछा।
ब्याह	=	विवाह।
विपरीत	=	उलटा, प्रतिकूल।
श्राद्ध-कर्म	=	मृत व्यक्ति के लिए श्रद्धा-पूर्वक दिया जाने वाला अन्न, वस्त्र आदि का दान।
शोक-प्रकाश	=	प्रिय व्यक्ति की मृत्यु पर दुख प्रकट करना।
पाठशाला	=	विद्यालय, स्कूल।
बुनियादी	=	मूलगत, आधार-रूप।
शैक्षिक	=	शिक्षा सम्बन्धी।
परिवर्तन	=	बदलना।
विश्वविद्यालय	=	वह संस्था, जहाँ सारी विद्याओं की ऊँची शिक्षा दी जाती है, युनिवर्सिटि।
अध्ययन	=	पढ़ना, पढ़ाई।
अनुकरणीय	=	नकल करने योग्य।

2. उत्तर दीजिए :

(क) मणिपुर के प्रमुख मूल निवासी कौन-कौन हैं ?

(ख) बाहर के लोग मणिपुर के लोगों को किस नाम से जानते हैं ?

(ग) मणिपुर में कौन-कौन से धर्मों के लोग रहते हैं ?

(घ) मणिपुरी स्त्रियों की दैनिक पोशाक कैसी होती है ?

(ङ) शादी-ब्याह और धार्मिक पर्वों पर मैतै नर-नारी कैसी पोशाक पहनते हैं ?

(च) मैतै स्त्रियाँ कब ''पुङौफनेक'' और सफेद चद्दर पहनती हैं ?

(छ) मणिपुर में कब से स्त्री-शिक्षा शुरू हुई थी ?

(ज) लुंगी ओर बुरका किस धार्मिक सम्मुद्राय की पोशाक हैं ?

(झ) पारम्परिक मैतै धर्म का पुनरुत्थान किसने किया ?

(ञ) मणिपुर के वस्त्रों में खामेन चत्पा का क्या महत्व है ?

(ट) मणिपुरी जाति में लैरूम की क्या विशेषता है ?

3. ***वाक्यों में प्रयोग कीजिए :***

सीमान्त ---------------------------------------

निवासी ---------------------------------------

अधिकांश ---------------------------------------

धर्मावलम्बी ---------------------------------------

अधोवस्त्र ---------------------------------------

रिवाज ---------------------------------------

पहनावा ---------------------------------------

बुनियादी ---------------------------------------

परिवर्तन ---------------------------------------

अनुकरणीय ---------------------------------------

4. ***खाली जगह भरिए :***

(क) *मैतै जाति के .... गौड़ीय .... हैं।*

(ख) *घर में स्त्रियों की .... बहुत .... हैं।*

(ग) *पुरुषों की वेश-भूषा .... करीब-करीब .... है।*

5. ***सही कथन के आगे (√) का निशान और गलत कथन के आगे (×) का निशान लगाइए :***

(क) मणिपुर की स्त्रियाँ फनेक पहनती हैं। [ ]

(ख) मैतै पुरुष धोती पहनते हैं। [ ]

(ग) शोक-प्रकाश के अवसर पर मणिपुर के लोग रंगीन वस्त्र पहनते हैं। [ ]

(घ) शादी-ब्याह में मैतै स्त्रियाँ बहुत कीमती फनेक पहनती हैं। [ ]

(ङ) मैतै स्त्रियाँ शादी-ब्याह में सोने के गहने भी पहनती हैं। [ ]

6. **पढ़िए और समझिए :**

दिन	-	**दैनिक**
शिक्षा	-	**शैक्षिक**
सप्ताह	-	**साप्ताहिक**
समाज	-	**सामाजिक**
नीति	-	**नैतिक**
मास	-	**मासिक**
वर्ष	-	**वार्षिक**
इतिहास	-	**ऐतिहासिक**
परम्परा	-	**पारम्परिक**
धर्म	-	**धार्मिक**

W3U8S7

पाठ - अट्ठारह

टेलीविजन की कहानी

दूरदर्शन, केन्द्र, प्रसारित, तरंग, ऐंटीना, आविष्कार, चेहरा, छवि, प्रदर्शन, अनुमति, प्रयोगात्मक, सार्वजनिक, संगठन, सदैव।

टेलीविजन को हिन्दी में दूरदर्शन कहते हैं। इसका सरल अर्थ है - दूर की चीजें देखना। रेडियो में कार्यक्रमों को केवल सुना जा सकता है, पर टेलीविजन में सुनना और देखना दोनों काम हो जाते हैं। जब टेलीविजन केन्द्र पर कोई कार्यक्रम प्रसारित होता है तब हवा में तरंगें उत्पन्न होती हैं। उन तरंगों को टेलीविजन का ऐंटीना पकड़ लेता है, फिर वे टेलीविजन सैट में लगे यन्त्रों की सहायता से चलचित्र में बदल जाती हैं।

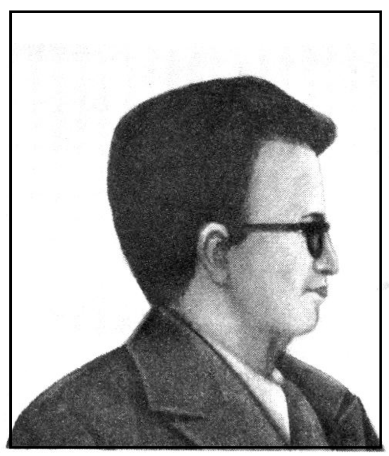

टेलीविजन का आविष्कार जॉन लॉगी बेयर्ड (1888-1946) ने किया था। उन्होंने सोचा कि एक ऐसी मशीन बनाई जाए, जो दूर बैठ कर बोलने वाले आदमी की आवाज सुनाने के साथ उसका चेहरा भी दिखा सके। सन् 1925 में उन्होंने मुख की छवि एक कमरे से दूसरे कमरे तक प्रसारित करने में थोड़ी सफलता प्राप्त की ।

सन् 1926 में जे. एल. बेयर्ड ने 'रायल इन्स्टीट्यूट ऑफ ग्रेट ब्रिटेन, लन्दन' में सर्वप्रथम टेलीविजन पर चित्र भेजने का प्रदर्शन किया।

तीन साल बाद बेयर्ड के आविष्कार के महत्व को समझा गया। सन् 1929 में बी.बी.सी. ने उन्हें 240 लाइनों पर चित्र प्रसारित करने की अनुमति दे दी।

भारत में 15 सितम्बर, 1959 को प्रयोगात्मक स्तर पर टेलीविजन का प्रसारण प्रारम्भ हुआ। इसे आकाशवाणी के एक अंश के रूप में शुरू किया गया। सन् 1965 में सर्वप्रथम दिल्ली से सार्वजनिक सामान्य सेवा आरम्भ की गई। सन् 1972 में टेलीविजन के कई केन्द्र खोले गए, जिनमें मुम्बई, कोलकाता, श्रीनगर, जालन्धर, चैन्नई और लखनऊ उल्लेखनीय हैं।

सन् 1976 में टेलीविजन का संगठन आकाशवाणी संगठन से अलग हो गया। इस अलग संगठन का नाम ''दूरदर्शन'' रखा गया। 15 अगस्त, 1982 का दिन दूरदर्शन के इतिहास में सदैव स्मरणीय रहेगा। उस दिन भारत के सभी दूरदर्शन केन्द्रों से रंगीन चित्रों का प्रसारण किया गया था।

हमारे राज्य में भी एक दूरदर्शन-केन्द्र है। उसे ''इम्फाल दूरदर्शन-केन्द्र'' कहा जाता है। यहाँ से मणिपुरी जीवन, संस्कृति और साहित्य सम्बन्धी कार्यक्रम विशेष रूप से प्रसारित किए जाते हैं।

प्रश्न - अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

दूरदर्शन = टेलीविजन।
केन्द्र = मुख्य स्थान, मध्यवर्ती स्थान।
प्रसारित = फैलाया हुआ।
तरंग = लहर।
आविष्कार = कोई अज्ञात बात खोज निकालना, नई चीज बनाना।

चेहरा	=	मुखमण्डल, मुखाकृति।
छवि	=	शोभा, तस्वीर, फोटो।
प्रदर्शन	=	दिखाना, दिखलाने की क्रिया।
अनुमति	=	स्वीकृति, इजाजत।
सार्वजनिक	=	सब से सम्बन्ध रखनेवाला।
संगठन	=	संस्था।
सदैव	=	हमेशा ही, सर्वदा।

2. उत्तर दीजिए :

(क) टेलीविजन को हिन्दी में क्या कहते हैं ?

(ख) टेलीविजन केन्द्र पर प्रसारित कार्यक्रम कैसे चलचित्र में बदल जाता है ?

(ग) किसने टेलीविजन का आविष्कार किया था ?

(घ) जे.एल. बेयर्ड ने क्या सोचा था ?

(ङ) सन् 1925 में जे.एल. बेयर्ड ने कैसी सफलता प्राप्त की ?

(च) सन् 1926 में जे.एल. बेयर्ड ने किसका प्रदर्शन किया ?

(छ) बी.बी.सी. ने जे.एल. बेयर्ड को किसकी अनुमति दी ?

(ज) भारत में टेलीविजन का प्रसारण कब शुरू हुआ ?

(झ) टेलीविजन की सार्वजनिक सामान्य सेवा सर्वप्रथम कब और कहाँ से शुरू की गई ?

(ञ) 15 अगस्त, 1982 का दिन दूरदर्शन के इतिहास में क्यों स्मरणीय रहेगा ?

(ट) मणिपुर के दूरदर्शन-केन्द्र का क्या नाम है ?

(ठ) मणिपुर के दूरदर्शन-केन्द्र से क्या-क्या प्रसारित किए जाते हैं ?

(ड) **मीडिया के साथ टेलीविजन का क्या सम्बन्ध है ?**

(ढ) **कंप्यूटर और टेलीविजन में क्या अन्तर है ?**

3. ***वाक्यों में प्रयोग कीजिए :***

तरंग ---------------------------------------

कार्यक्रम ---------------------------------------

प्रदर्शन ---------------------------------------

आविष्कार ---------------------------------------

अनुमति ---------------------------------------

सार्वजनिक ---------------------------------------

संगठन ---------------------------------------

प्रसारण ---------------------------------------

सदैव ---------------------------------------

स्मरणीय ---------------------------------------

4. ***तालिका को देखिए, ध्यान से पढ़िए और ''क'' तथा ''ख'' के वाक्यांशों को सही ढंग से जोड़ कर लिखिए :***

क	ख
टेलीविजन को	एक दूरदर्शन केन्द्र है।
टेलीविजन का आविष्कार	''दूरदर्शन'' रखा गया।
अलग संगठन का नाम	हिन्दी में दूरदर्शन कहते हैं।
हमारे राज्य में भी	जॉन लॉगी बेयर्ड ने किया था।

....

....

....

....

5. ***सही कथन चुनिए और लिखिए :***

(क) टेलीविजन में कार्यक्रम को देखा जा सकता है।

(ख) बेयर्ड ने इंग्लैण्ड में एक बड़ा कारखाना खोला।

(ग) भारत में टेलीविजन का प्रसारण प्रयोगात्मक स्तर पर प्रारम्भ हुआ।

(घ) सन् 1965 में सर्वप्रथम दिल्ली से सार्वजनिक सामान्य सेवा आरम्भ की गई।

(ङ) हमारे राज्य में भी कई दूरदर्शन-केन्द्र हैं।

....

....

....

....

....

6. **ध्यान से पढ़िए और अर्ध-समरूपी शब्दों के अर्थों की भिन्नता को समझिए :**

अनल	= आग		कुल	=	सभी, वंश
अनिल	=	हवा	कूल	=	किनारा
अपेक्षा	=	तुलना	कांति	=	चमक
उपेक्षा	=	निरादर	क्रांति	=	उलट-फेर
अलि	=	भौंरा	ग्रह	=	सूर्य, चन्द्र आदि
अली	=	सखी	गृह	=	घर
आदि	=	आरम्भ, इत्यादि	चिर	=	सदा
आदी	=	अभ्यस्त	चीर	=	कपड़ा
आकर	=	खान	द्वीप	=	टापू
आकार	=	रूप	दीप	=	दीपक
अपकार	=	बुराई	मेल	=	एकता
उपकार	=	भलाई	मैल	=	मैला
हंस	=	एक पक्षी विशेष	सूत	=	धागा
हँस	=	हँसना	सुत	=	पुत्र

7. *अर्ध-समरूपी शब्दों के भिन्न अर्थ लिखिए :*

कुल = ...

कूल = ...

आकर = ...

आकार = ...

द्वीप = ...

दीप = ...

सूत = ...

सुत = ...

G5Z4I6

पाठ - उन्नीस

मधुमक्खी

मधुमक्खी, वाणी, पराग, छत्ता, परिश्रम, शहद, मेहनत।

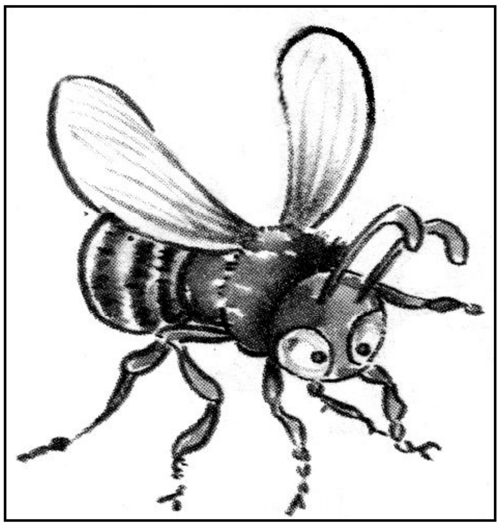

मधुमक्खी दिनभर उड़ती है ।
फूल-फूल तक जाती है ।
अपनी मीठी वाणी में वह -
उनको गीत सुनाती है ।।

उनसे लेती वह पराग, फिर -
छत्ते में आ जाती है ।
कठिन परिश्रम करके, उससे,
मीठा शहद बनाती है ।।

मधुमक्खी से हम भी सीखें ।
सभी काम मेहनत से करना ।
रहना सीखें सदा प्यार से ।
कभी न लड़ना और झगड़ना ।।

प्रश्न - अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

मधुमक्खी	=	शहद तैयार करने वाली मक्खी।
वाणी	=	वचन।
पराग	=	फूल के भीतर की धूल, पुष्परज।
छत्ता	=	मधुमक्खियों का घर।
परिश्रम	=	मेहनत।
शहद	=	मधु।

2. उत्तर दीजिए :

(क) मधुमक्खी दिनभर उड़कर क्या करती है ?

(ख) मधुमक्खी मीठी वाणी में किसको क्या सुनाती है ?

(ग) मधुमक्खी कैसे शहद बनाती है ?

(घ) हमें मधुमक्खी से क्या-क्या सीखना चाहिए ?

(ङ) मधुमखी जैसा मेहनत करनेवाला किसी दूसरे कीड़े मकोड़े का नाम बताइए।

(च) अपने घर के आस-पास रहनेवाले किसी मेहनती व्यक्ति के बारे में कुछ वाक्य लिखिए ।

3. **वाक्यों में प्रयोग कीजिए :**

वाणी --

पराग --

परिश्रम --

मेहनत --

दिनभर --

झगड़ना --

4. ***पूरा कीजिए :***

उनसे लेती .... ।

छत्ते में .... ।

.... *करके, उससे*

मीठा .... ॥

5. ***प्रत्येक दो वाक्यों को ''और'' से जोड़ कर लिखिए :***

क) *हम सुबह पढ़ते हैं। हम शाम को खेलते हैं।*

....

ख) *माँ खाना पकाती है। वह रोटी भी बना सकती है।*

....

ग) *मैं रोज पुस्तकालय जाता हूँ। मैं वहाँ पुस्तक पढ़ता हूँ।*

....

घ) *मैं वहाँ जाऊँगा। वह यहाँ आएगा।*

....

ङ) *अंगरेजों ने बादशाह बहादुर शाह ज़फर को पकड़ा।*

अंगरेजों ने बादशाह ज़फर को कैदखाने में रख दिया।

....

....

6. **ध्यान से पढ़िये और समझिए:**

मधुमक्खी **दिन भर उड़ती है ।**

फूल फूल तक जाती है ।

फूलोंको गीत सुनाती है ।

इन तीन वाक्यों में मधुमुखी के बारे में हम कुछ कहना चाहते हैं और दिन भर उड़ती है , फूल-फूल तक जाती है, फूलों को गीत सुनाती है के द्वारा मधुमक्खी के बारे में कुछ-न-कुछ कहा गया है । इस तरह किसी वाक्य में जिसके बारे में कुछ कहा गया हो, उसे उद्देश्य कहते हैं और उस वाक्य में उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाए, उसे विधेय कहते हे। उद्देश्य और विधेय वाक्य के अंग हैं ।

पाठ - बीस

कुपोषण

करीब, खेती-बाड़ी, डिस्पेंसरी, चिकित्सालय, धनवान, अन्न, पौष, वातावरण, सन्नाटा, मौसम, जिद्दी, आमदनी, प्रतिश्याय, खसरा, दस्त, पेचिश, मन्दाग्नि, खुजली, कुपोषण, भोंकना, गुजरना, सकपकाना ।

इम्फाल शहर से करीब पन्द्रह कि.मी.दूर उत्तर की तरफ एक गाँव है - 'पुखाओ'। यहाँ के लोगों का मुख्य धन्धा खेती-बाड़ी करना और सूखी लकड़ियाँ काट कर बेचना है। यहाँ निर्धन लोगों की संख्या अधिक है। सुख तथा आराम की सुविधाएँ कम हैं। यहाँ एक छोटी-सी डिस्पेंसरी भी है। उसमें साधारण रोगों का इलाज होता है। बड़ी बीमारियों के लिए शहर के चिकित्सालय में जाना पड़ता है।

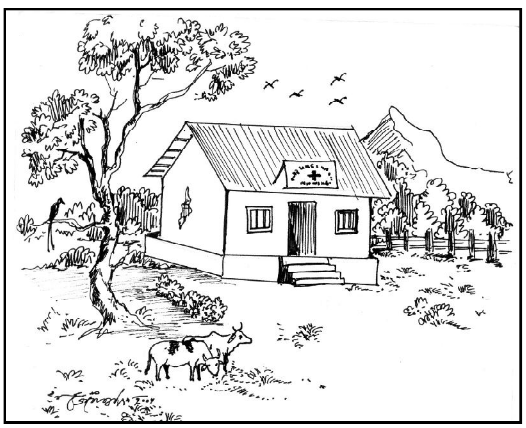

इसी गाँव में इबेमहल का एक परिवार है, जिसमें दो लड़कियाँ और तीन लड़के हैं। तीनों लड़के छोटे ही हैं। बच्चों के माता-पिता एक धनवान किसान के खेत में काम करते हैं। खेत में जो भी फसल होती है, सब धनवान किसान के घर चली जाती है। इबेमहल के बच्चों को पेट भर खाने का अन्न कम मिलता है।

पौष की रात। वातावरण में सन्नाटा । ठण्डा मौसम। दूर कुत्ते भोंकने की धीमी आवाज। माता-पिता अपनी सन्तान के पालन-पोषण के बारे में विचार कर रहे थे। रात काफी हो चुकी थी। उसी समय सब से छोटा लड़का उठ कर कहने लगा - ''अम्मा, खाना नहीं बनाओगी, भूख लगी है, ठण्ड भी बहुत है।''

माँ ने कहा - ''सुबह का खाना थोड़ा-सा बचा कर रखा है। कल सुबह उठकर खा लेना। आज रात ऐसे ही सो जाओ।''

लड़का नहीं माना। खाने का जिद करता रहा। गुस्सा होकर माँ ने कहा - ''बड़ा जिद्दी लड़का है, कहना नहीं मानता। रात को उठकर खाना माँगता है।''

माँ-बाप की आमदनी से बच्चों का अच्छी तरह पालन-पोषण नहीं हो पाता। इबेमहल के बच्चे घर में जो भी मिले, खा लेते हैं। दिन भर धूल और कीचड़ में खेलते रहते हैं। रात होने पर ऐसे ही चारपाई पर जाकर सो जाते हैं। पिछले साल तीसरा लड़का प्रतिश्याय की बीमारी (इन्फ्लुएंजा) से परेशान रहा और बड़ी लड़की को भी बुखार आ गया। चौथे लड़के को भी अचानक गर्मी के दिनों में खसरा का रोग लग गया।

दो-तीन दिन गुजर गए। इबेमहल शाम को खेत से वापस आई तो देखा, उसका सब से बड़ा लड़का बिस्तर पर लेटा है। पूछने पर पता चला कि उसको दस्त लग गए हैं। गाँव में तुरन्त इलाज की सुविधा नहीं थी। रात भर माँ परेशान रही। सुबह हुई। इबेमहल लड़का लेकर गाँव की डिस्पेंसरी में आई।

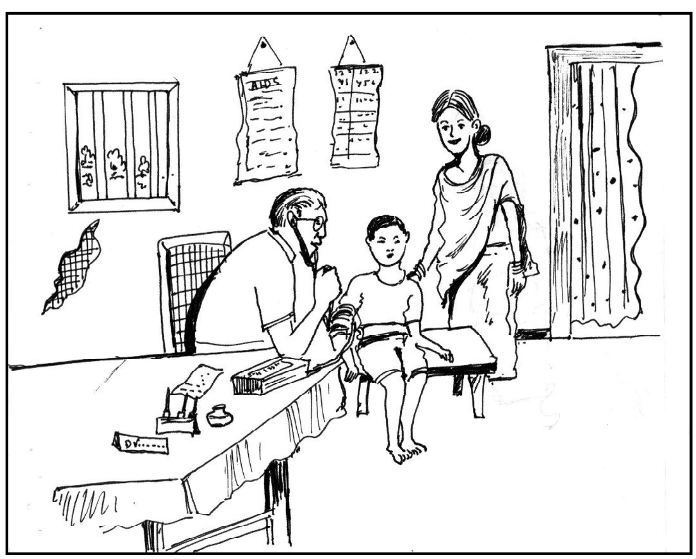

डॉक्टर लड़के की हालत देख कर बिगड़ गया। वह लम्बा भाषण देने लगा कि बच्चों का अच्छी तरह पालन-पोषण न करने से कई रोग लग सकते हैं, जैसे दस्त होना, बुखार आना, पेचिश तथा मन्दाग्नि का रोग होना, खुजली होना आदि। कुपोषण से बच्चों की जल्दी मृत्यु भी हो सकती है।

इबेमहल थोड़ी देर चुप रही। जब डॉक्टर शान्त हुआ तो उसने कहा -''डॉक्टर साहब, पहले आप मेरे बेटे का इलाज कीजिए, तब मैं बताऊँगी कि इन रोगों से भी बड़ा एक और रोग है।'' डॉक्टर सकपका गया। उसने पूछा - ''वह कौन-सा रोग है ?'' इबेमहल बोली, ''डॉक्टर साहब, वह रोग स्वयं कुपोषण है और उसका कारण निर्धनता है।''

डॉक्टर इबेमहल का मुँह ताकने लगा ।

प्रश्न - अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

करीब	=	पास, निकट।
चिकित्सालय	=	अस्पताल।
धनवान	=	धनी, जिस के पास धन हो।
अन्न	=	अनाज, भात।
पौष	=	हिन्दू वर्ष का दसवाँ माह।
वातावरण	=	परिस्थिति।
सन्नाटा	=	नीरवता, निर्जनता, चुप्पी।
मौसम	=	समय,ऋतु।
जिद्दी	=	हठी, जिद करने वाला।
आमदनी	=	आय।
प्रतिश्याय	=	जुकाम, सर्दी।
खसरा	=	एक विशेष बीमारी, मीजल ।
दस्त	=	पतला पाखाना।
पेचिश	=	आमाशय में मरोड़ की बीमारी जिसमें आँव गिरता है।
मन्दाग्नि	=	पाचनशक्ति का दुर्बल हो जाना।
खुजली	=	एक रोग जिसमें त्वचा पर दाने निकलते और उनमें तीव्र खुजली होती है।

कुपोषण	=	ठीक ढंग से पोषण न करना।
भोंकना	=	कुत्ते का भौं-भौं करना।
गुजरना	=	बीतना।
सकपकाना	=	चकित होना।

2. उत्तर दीजिए :

(क) पुखाओ के लोगों का मुख्य धन्धा क्या है ?
(ख) पुखाओ के लोगों के इलाज की व्यवस्था कहाँ होती है ?
(ग) इबेमहल के परिवार में कौन-कौन हैं ?
(घ) इबेमहल के बच्चों को पेट भर खाने का अन्न क्यों कम मिलता है ?
(ङ) इबेमहल का छोटा लड़का क्यों जिद करता है ?
(च) गुस्सा होकर इबेमहल ने क्या कहा ?
(छ) इबेमहल के बच्चे दिन-रात क्या करते रहते हैं ?
(ज) इबेमहल के बच्चों को क्या-क्या बीमारियाँ हुईं ?
(झ) इबेमहल रात भर क्यों परेशान रही ?
(ञ) डॉक्टर क्यों बिगड़ गया ?
(ट) बच्चों का अच्छी तरह पालन-पोषण न करने से क्या-क्या रोग लग सकते हैं ?
(ठ) डॉक्टर क्यों सकपका गया ?
(ड) इबेमहल के परिवार में कौन-सा बड़ा रोग है और उसका कारण क्या है ?
(ढ) इम्फाल शहर के किसी एक प्रसिद्ध चिकित्सालय के बारे में बताइए ।
(ण) चिकित्सालय की आवश्यकता पर अपना मत प्रकट कीजिए ।

3. ***वाक्यों में प्रयोग कीजिए :***

खेती-बाड़ी ------------------------------------

वातावरण -------------------------------------

जिद्दी -------------------------------------

सन्नाटा -------------------------------------

कुपोषण ---------------------------------------

आमदनी ---------------------------------------

धनवान ---------------------------------------

चिकित्सालय ---------------------------------------

निर्धनता ---------------------------------------

पालन-पोषण ---------------------------------------

4. ***सही कथन चुनकर लिखिए :***

(क) पुखाओ में निर्धन लोगों की संख्या अधिक है।

(ख) पुखाओ में एक छोटी-सी डिस्पेंसरी है।

(ग) इबेमहल के बच्चों को खाने का अन्न बहुत मिलता है।

(घ) बच्चों का अच्छी तरह पालन-पोषण नहीं हो पाता।

(ङ) गाँव में तुरन्त इलाज की सुविधा थी।

(च) कुपोषण से बच्चों की जल्दी मृत्यु भी हो सकती है।

....

....

....

....

....

....

5. *तालिका को देखिए और सही ढंग से वाक्य बनाइए :*

		चौथे	*लड़के*		*दस्त की बीमारी हुई।*
इबेमहल	*के*	*बड़े*		*को*	*खसरा का रोग लग गया।*
	की	*बड़ी*			*प्रतिश्याय की बीमारी है।*
		तीसरे	*लड़की*		*बुखार आ गया।*

....

....

....

....

6. ध्यान से पढ़िए और याद रखिए :

हिन्दी में बारह महीनों के नाम क्रम से इस प्रकार हैं – चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्र, आश्विन, कार्तिक , अगहन, पौष, माघ और फाल्गुन।

7. **ध्यान से देखिए, पढ़िए और समझिए :**

चिकित्सालय	=	**चिकित्सा**	+	**आलय**
विद्‌यालय	=	**विद्‌या**	+	**आलय**
सूर्योदय	=	**सूर्य**	+	**उदय**
सूर्यास्त	=	**सूर्य**	+	**अस्त**
उत्तरोत्तर	=	**उत्तर**	+	**उत्तर**
उत्तराधिकारी	=	**उत्तर**	+	**अधिकारी**
कार्योन्मुख	=	**कार्य**	+	**उन्मुख**

महत्वाकांक्षा	=	महत्व	+ आकांक्षा
पुनर्जीवित	=	पुनः	+ जीवित
पुष्पांजलि	=	पुष्प	+ अंजलि

8. ध्यान से देखिए ओर समझिए :

उपसर्ग	मूल शब्द	नया शब्द
प्र		प्रहार
आ		आहार
वि	हार	विहार
सं		संहार
परि		परिहार

उपर्युक्त मूल शब्द हार के पूर्व प्र, आ, वि, सम, और परि, लगाकर प्रहार, आहार, विहार संहार और परिहार जैसे नये शब्दों का निर्माण किया जाता है । इसलिए जो शब्दांश मूल शब्द के पूर्व जुड़कर शब्दके अर्थ में परिवर्तन कर देता है, उसे उपसर्ग कहते हैं । जैसे :

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
अ	नहीं, अभाव	अनाथ, अज्ञान, अधर्म
अन	नहीं, अभाव	अनादि, अनादर, अनावश्यक
अति	अधिक	अत्यधिक, अतिरिक्त, अतिशय
कु	बुरा	कुकर्म, कुरूप, कुपुत्र
तत	उसके जैसा	तत्काल, तत्पर, तत्पश्चात

D3Y6T3

पाठ - इककीस

शुमाङ्-लीला

नाट्य, शैली, शाब्दिक, आंगन, प्रयुक्त, मंच, दर्शक, शताब्दी, पूर्वाद्र्ध, मंचन, मण्डली, वन्दना, प्रथा, हास्य, उत्पत्ति, पृष्ठभूमि, प्रकाश-व्यवस्था, संगीत, संवाद, मनोरंजन, आर्थिक, प्रतिध्वनित, प्रबल, आंचलिक, बावजूद, तत्व, विद्यमान, अस्तित्व, समेटना।

शुमाङ्-लीला मणिपुर की एक नाट्य शैली है। शुमाङ् का शाब्दिक अर्थ है, आंगन। आंगन में नाटक के प्रदर्शन के लिए प्रयुक्त नाट्य शैली को शुमाङ्-लीला कहा जाता है। यह खुले मंच की नाट्य शैली है। दर्शक चारों ओर बैठ कर नाटक देखते हैं। यह शैली बीसवीं शताब्दी के लगभग पूर्वाद्र्ध में प्रारम्भ हुई थी। प्रारम्भ में यह पूर्व रूप से लोक-नाट्य था, लेकिन धीरे-धीरे इसपर आधुनिक नाटक का प्रभाव पड़ने लगा।

शुमाङ्-लीला मण्डप-लीला का एक विकसित रूप है। इसके मंचन के पूर्व मंडली-पूजा, सभारम्भ गीत, सभा-वन्दना और गुरु-वन्दना आदि की प्रथा है। प्रारम्भ में यह हास्य रस पर आधारित थी। थोक-लीला, फदिबी पाला, काबुल-पाला और थेंगु-लीला इसके प्रारम्भिक रूप हैं।

शुमाङ-लीला की उत्पत्ति लोक-नाट्य की पृष्ठभूमि पर होने के कारण इसका लोक-नाट्य शैली के साथ सीधा सम्बन्ध है। इस नाट्य शैली में पर्दे का प्रयोग नहीं किया जाता। आधुनिक नाटकों की भाँति इसमें प्रकाश-व्यवस्था का महत्व भी नहीं है। मण्डप-लीला से विकसित होने के कारण इसपर संगीत और नृत्य का प्रभाव अधिक था। लेकिन धीरे-धीरे यह संवादों पर आधारित नाट्य शैली बन गई। राजा हरिश्चन्द्र नृत्य और संगीत पर आधारित प्रारम्भिक शुमाङ्-लीलाओं में से एक है। इसमें पूर्ण रूप से मण्डप-लीला की विशेषताएँ उपलब्ध हैं।

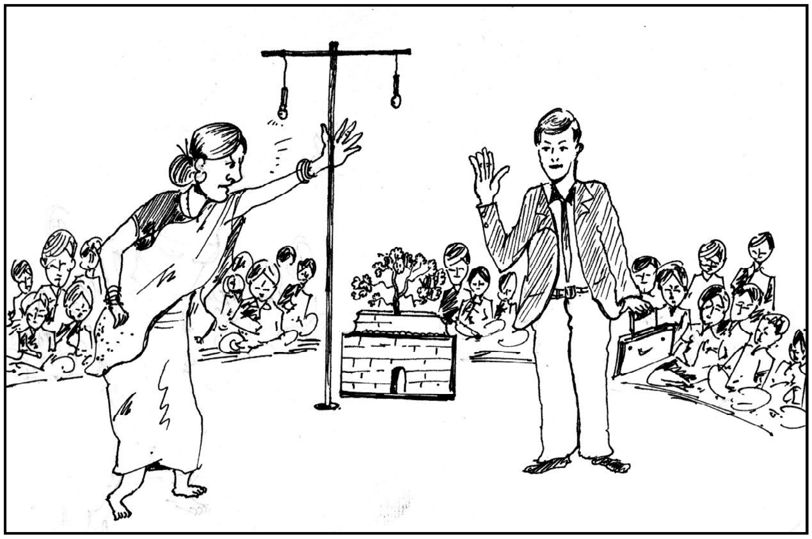

आजकल शुमाङ्-लीला पर आधुनिक हिन्दी फिल्मों का प्रभाव पड़ने लगा है। लीला के कथा-विकास में बीच-बीच में नायक-नायिका के गीत और नृत्य लोक-मनोरंजन के लिए जोड़े जाने लगे हैं। आधुनिक शुमाङ्लीला मुख्यतः राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विभिन्न विषयों को भी अपने में समेटे हुए हैं। यह आधुनिक लोक-मानस को प्रतिध्वनित करने वाला सब से प्रबल माध्यम है। कभी-कभी शुमाङ्- लीला आँचलिक और प्रादेशिक विषयों के अतिरिक्त अन्तरराष्ट्रीय समस्याओं को भी प्रस्तुत करती है।

शुमाङ्-लीला पर आधुनिक नाटक का प्रभाव पड़ने के बावजूद उसमें परम्परागत लोक-तत्व आज भी विद्यमान हैं। लेकिन यह धीरे-धीरे लोक-नाट्य की शैली से दूर हटने लगी है। इसलिए इसका अस्तित्व और पहचान बचाए रखनी अनिवार्य है।

प्रश्न - अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

नाट्य = नाटक आदि का अभिनय, अभिनय-कला।

शैली = काम करने का ढंग, तरीका, रीति।

शाब्दिक = शब्द सम्बन्धी।

आंगन	=	घर के भीतर की खुली हुई समतल भूमि, सहन।
प्रयुक्त	=	जिसका प्रयोग किया गया हो।
मंच	=	रंगभूमि।
दर्शक	=	देखने वाला ।
शताब्दी	=	सौ सालों की अवधि।
पूर्वाद्र्ध	=	दो बराबर भागों में से पहला भाग ।
मण्डली	=	समुदाय, ग्रुप।
वन्दना	=	पूजन, स्तुति।
प्रथा	=	रीति, परिपाटी।
हास्य	=	हँसी, मजाक, हँसने योग्य।
उत्पत्ति	=	जन्म।
पृष्ठभूमि	=	पीछे की भूमि, पीछे का दृश्य, पहले की बातें।
संगीत	=	नृत्य और वाद्य के साथ गाने की कला।
संवाद	=	वार्तालाप।
मनोरंजन	=	मनबहलाव, दिल का खुश होना।
आर्थिक	=	रुपए-पैसे से सम्बन्ध रखने वाला।
प्रतिध्वनित	=	गूँजा हुआ।
प्रबल	=	बहुत बली, प्रचण्ड, उग्र।
बावजूद	=	ऐसा होते हुए भी।
तत्व	=	सार, वस्तुस्थिति।
विद्यमान	=	उपस्थित।
अस्तित्व	=	सत्ता, विद्यमान होना।
समेटना	=	बटोरना, इकट्ठा करना।

2. उत्तर दीजिए :

(क) शुमाङ्-लीला किसे कहा जाता है ?

(ख) शुमाङ्-लीला की शैली कब प्रारम्भ हुई ?

(ग) शुमाङ्-लीला के मंचन के पूर्व क्या-क्या होते हैं ?

(घ) शुमाङ्-लीला के प्रारम्भिक रूप क्या-क्या हैं ?

(ङ) शुमाङ्-लीला का लोक-नाट्य शैली के साथ सीधा सम्बन्ध क्यों है ?

(छ) संगीत और नृत्य पर आधारित एक प्रारम्भिक शुमाङ्-लीला का नाम बताइए ।

(ज) आजकल शुमाङ्-लीला पर किसका प्रभाव है ?

(झ) आधुनिक शुमाङ्-लीला किसका प्रबल माध्यम है ?

(ञ) आजकल शुमाङ्-लीला में क्या-क्या जोड़े जाते हैं ?

(ट) शुमाङ्-लीला का अस्तित्व और पहचान बनाए रखनी क्यों अनिवार्य है ?

(ठ) लोक नाट्य क्या है ?

(ड) शुमाङ लीला के सन्दर्भ में इपोम का परिचय दीजिए ।

3. ***वाक्यों में प्रयोग कीजिए :***

शैली --

प्रयुक्त --

पूर्वाद्र्ध --

हास्य --

मनोरंजन --

बावजूद --

विद्यमान --

अतिरिक्त --

अस्तित्व --

4. ***तालिका को देखिए, और सही ढंग*** **से वाक्य बनाइए : से** वाक्य बनाइए :

शुमाङ्-लीला	*का/में*	*मणिपुर की एक नाट्य शैली* *मण्डप-लीला का विकसित रूप* *लोक-नाट्य शैली के साथ सीधा सम्बन्ध* *गीत और नृत्य भी होते* *अस्तित्व और पहचान बचाए रखनी*	*है/हैं।*

....

....

....

....

....

5. ***खाली जगह भरिए :***

(क) दर्शक .... बैठ कर .... हैं।

(ख) इस नाट्य शैली .... किया जाता।

(ग) धीरे-धीरे यह .... नाट्य शैली भी .... ।

(घ) शुमाङ्-लीला में परम्परागत .... आज भी .... हैं।

(ङ) यह धीरे-धीरे .... शैली से .... लगी है।

6. ध्यान से पढ़िये और समझिए :

मूल शब्द/धातु	प्रत्यय	नया शब्द

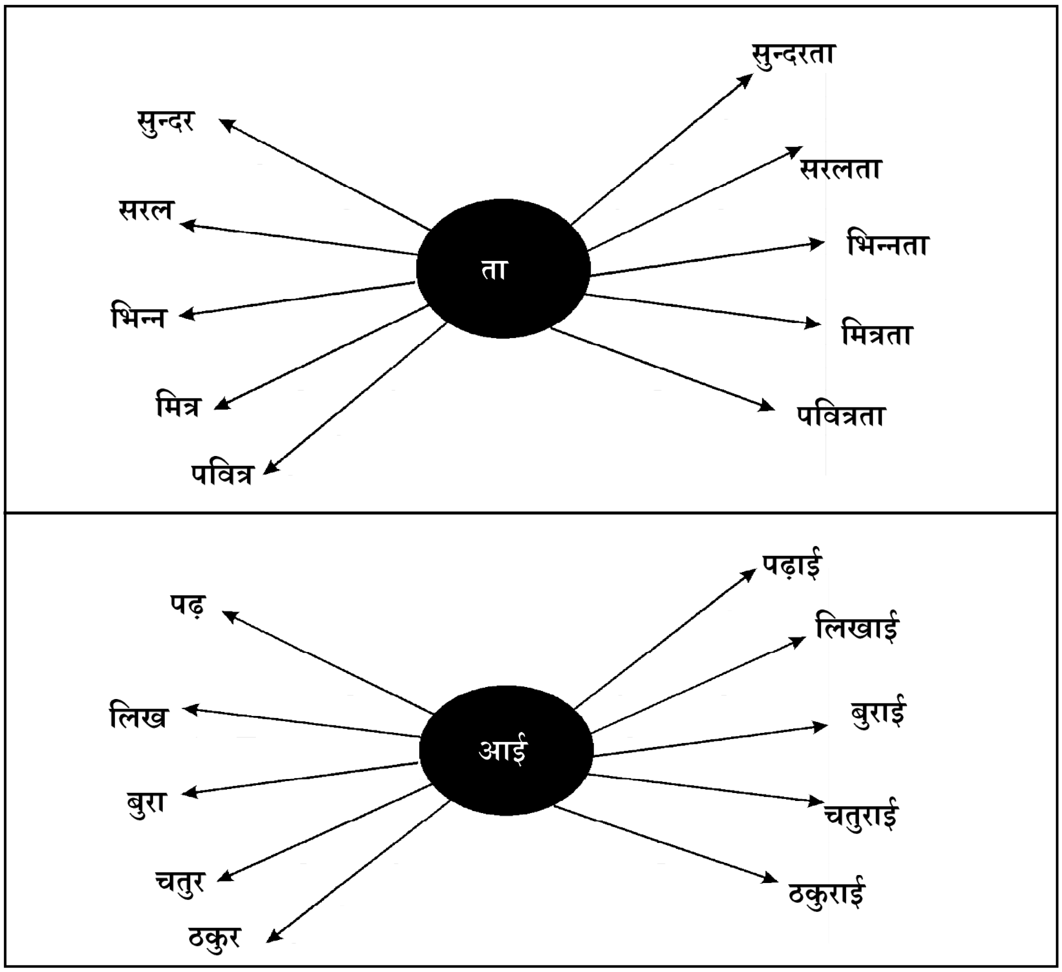

उपर्युक्त पहली पंक्ति के सभी शब्दों के अन्त में 'ता' और दूसरी पंक्ति में 'आई' प्रयुक्त हैं । इस तरह मूल शब्द या धातु के अन्त में जोड़नेवाले नये शब्दांश को प्रत्यय कहा जाता है । जैसे :
हँस+ ई = हँसी, लिख + आवट = लिखावट , उड़+ आन उड़ान, चिल्ला + आहट = चिल्लाहट , सुन्दर + ता = सुन्दरता, गरीब+ई = गरीबी, गरम + आहट = गरमाहट, व्यक्ति + त्व= व्यक्तित्व, बालक + पन = बालकपन, रूप+ अक= रूपक, और रस+ईला=रसीला आदि ।

नागरिकों के मूल कर्तव्य

प्रत्येक नागरिक -

क. संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे ।

ख. स्वतन्त्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे ।

ग. भारत की संप्रभुता एकता और अखण्डता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे ।

घ. देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे ।

ङ. भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे, जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे, जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों ।

च. हमारी सामाजिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करे ।

छ. प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्दर वन, झील, नदी और वन्य-जीव हैं - रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दया भाव रखे।

ज. वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे ।

झ. सार्वजनिक सम्पत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे ।

ञ. व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरन्तर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके ।

अध्यापकों के लिए निर्देश

नागरिकों के इन मूल कर्तव्यों का विधान भारत के संविधान के भाग - IV – क के अनुच्छेद 51 में किया गया है। यहाँ उन्हें ''राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद'' द्वारा 'विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्चर्या की रूपरेखा' शीर्षक पुस्तक के पृ. 35 एवं 36 से ग्रहण करके प्रस्तुत किया गया है।

विषय अध्यापक के लिए आवश्यक है कि वह छात्रों से कक्षा में इनका बार-बार पाठ कराए, व्याख्या करके समझाए और कण्ठस्थ कराए।

राष्ट्रगान

जन-गण-मन- अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब-सिंधु-गुजरात-मराठा,
द्राविड़-उत्कल-बंग,
विंध्य-हिमाचल, जमुना-गंगा
उच्छल जलधि-तरंग,
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय-गाथा।
जनगण-मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे।